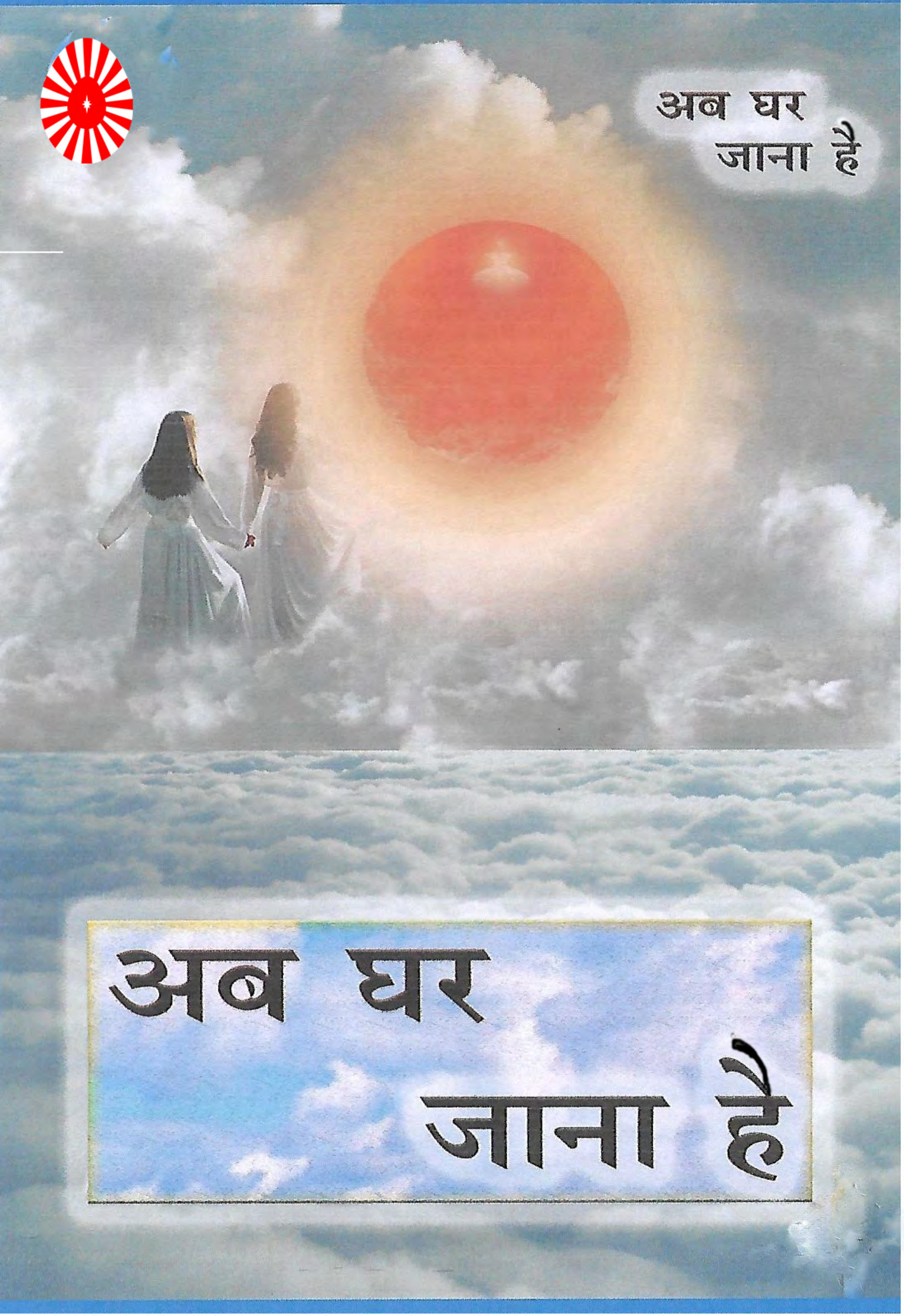
अब घर जाना है
अब घर जाना है

अब घर जाना है...

कृति

(संकलन)

स्पार्क (**SpARC**)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

एवं

राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान

पांडव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान.

विषय सूचि

1.बापदादा के गंभीर इशारे (समय की समीपता) - 4-9-05 से 15-12-07.....05

2.बेहद के वैरागी बनो, अब वापिस घर जाना है......................................06

3.लगाव मुक्त बन बेहद के वैरागी बनो. 07

4.दादीजी का क्लास (जुलाई-2000)

अब घर चलने की तैयारी करो उपराम रहो - बेहद के वैरागी बनो 09

5.बापदादा के गंभीर इशारे - समय की समीपता.. 4-9-05 से 28-3-06.......11

6. होमवर्क न करनेवालों की सज़ा - 31-12-05.................................13

7. बापदादा ने टीचर रुप धारण किया - 28-3-06...............................18

8.बापदादा के गंभीर इशारे - समय की समीपता - 31-10-06 से 31-3-07...19

9.संगमयुग की समाप्ति - क्यों ? 23

10.बापदादा के गंभीर इशारे - समय की समीपता 6-09-07 से 15-12-07 ..38

11.दादी जी की पधरामणी - 7.30 बजे शाम को दादी गुल्जारजी के तन में 38

12. टीचर का रुप - 31-10-07...42

14.अव्यक्त बापदादा - वतन के दिव्य संदेश 47

15. मम्मा स्मृति दिन निमित्त - 21-06-07...47

16. दादीजी के अव्यक्त होने के बाद - 27-8-07.................................48

17. दादीजी के प्रथम मास निमित्त - 27-09-07..................................54

18. देश विदेश के मुख्य भाई-बहनों की मीटिंग में - 20-10-07.................55

19. दादीजी की दूसरे मास की तिथि - 25-10-07................................55

20. दिवाली निमित्त - मोहिनी बहन द्वारा - 09-11-07...........................56

21. दिवाली निमित्त- गुल्ज़ार दादी द्वारा - 09-11-07............................56

22. दादीजी के तीसरा मास निमित्त - 29-11-07.................................57

वर्ष 2005 से 2007 तक की अव्यक्त वाणियों में बापदादा ने समय की समीपता के जो गंभीर महावाक्य उच्चारण किये हैं उनको अलग कर ये संग्रह बनाया गया है। साथ साथ हमारी सबकी प्यारी, बापदादा समान, फरिश्ता स्वरुप आदरणीया दादीजी ने आज से 7 वर्ष पहले जो समय की समीपता के स्पष्ट महावाक्य उच्चारे थे वह भी इसमें शामिल है। ये महावाक्य बार बार पढ़ने से आत्मा के अंदर से जो आलस्य-अलबेलेपन की माया है, वह दूर हो जाती है और आत्मा संपन्न स्थिति प्राप्त करने की तैयारी में लग जाती है।

बापदादा के गंभीर इशारे (समय की समीपता)

04-09-05 से 15-12-07

- बाप अभी बच्चों के दु:ख की पुकार सुनते हुए परिवर्तन चाहते हैं...
- मुक्तिधाम में जाना है, अनेक दु:खी, अशांत आत्माओं को मुक्तिदाता बाप के साथी बन मुक्ति दिलाना है....
- विनाशकारी तो तड़प रहे हैं कि विनाश करें...? विनाश करें...?
- बाप से प्रकृति भी पूछती है कि कब तक विनाश करें ?
- माया भी अभी थक गई है, वह भी चाहती है कि अब हमें भी मुक्ति दे दो...
- भक्त भी भक्ति कर कर के थक गये है - उन्हें भी मुक्ति का वर्सा दिलाओ...
- एडवान्स पार्टी भी कह रही है-कब बाप के साथ मुक्तिधाम का दरवाजा खोलेंगे... .

प्यारे ब्रह्माबाबा को शिव परमात्मा ने 1937 में पुरानी दुनिया के महाविनाश का साक्षात्कार कराया था .... जो अभी साक्षात होगा।

बेहद के वैरागी बनो, अब वापिस घर जाना है..

अभी थोड़े समय के बाद ही सारी पुरानी, पतित, भ्रष्टाचारी दुनिया का महाविनाश शुरु हो जायेगा, पुरानी पतित सृष्टि की समाप्ति का नगाड़ा बजेगा, विनाशलीला का तांडव नृत्य चारों तरफ से चलेगा। मुक्तिधाम का गेट खुलेगा। प्रकृति के पाँचो तत्वों का भारी प्रकोप होगा। नेचुरल केलेमिटीज़ आयेंगी। जबर्दस्त भूकंप होगा, वायु के भी प्रकोप होंगे, ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण आकाश से अग्नि वर्षा होगी, आग लगेगी, समुद्र उछलेगा, मूसलाधार बारिश होगी, एक हिस्सा धरनी बाकी सब जलमय होगा, सारी खेती पानी में डूब जायेगी। दूसरी ओर भारत में जबर्दस्त गृहयुद्ध होगा, खूनी नाहक खेल होगा। तीसरी ओर अंतिम तीसरा विश्व युद्ध होगा, अणु-परमाणु बॉम्ब्स गिरेंगे, करोड़ों की संख्या में आत्मायें शरीर छोडेंगी। पानी की एक बूँद भी पीने को नहीं रहेगी। अनाज भी खाने लायक नहीं रहेगा, पेट पीठ से लग जायेगा, धन होते हुए भी धन काम में नहीं आयेगा। साधन होते भी साधनों द्वारा प्राप्ति नहीं होगी। विकारों का, पुराने विकारी संस्कारो का, तमोगुणी आत्माओं का वार होगा। सारी दुनिया में त्राही- त्राही होगी, रोनेवाला कोई भी नहीं रहेगा। जिन्हें तुम अपना समझते हो, जो तुम इन आँखों से देखते हो, वह सब कुछ समाप्त हो जायेगा । चारों तरफ दु:खों का हाहाकार बढ़ेगा। सुख की एक झलक भी दिखाई नहीं देगी। ये चमकीली रावण की सोने की लंका भस्म हो जायेगी। और ये समय अचानक ही आयेगा।

इसलिए हे मीठे बच्चे, मीठी आत्मायें - अब तो ऐसी मिटनेवाली दुनिया से बेहद के वैरागी बनो, नष्टोमोहा बनो। अब वापिस अपने घर परमधाम चलना हैं तो गहन तपस्या में लग जाओ। यही तपस्या वा साधना ही ऐसे विकराल तांडव में आपके काम आयेगी, विनाश के समय सेफ्टी का साधन बनेगी। इसलिये संसार की झूठी बातों में अपना समय बरबाद नहीं करो और अपना श्रेष्ठ पार्ट बजाते भी श्वासों श्वास परमात्मा पिता शिवबाबा की याद में मस्त रहो । भगवान आपके साथ ही साथ हैं, मददगार हैं... सिर्फ बाबा की याद ही आपको इस विनाश ज्वाला से न्यारा और प्यारा

बनायेगी, हाहाकार के बीच भी आप प्रभु मिलन के सुख का अनुभव कर सकेंगे। इसलिए अभी से निरंतर बाबा की याद का अभ्यास करते रहो। - ब्रह्माकुमारीज़

23-02-97

ऐसे नहीं सोचना कि अभी कुछ समय तो पड़ा है, इतने में विनाश तो होना नहीं हैं, यह नहीं सोचना। विनाश होना है अचानक। पूछकर नहीं आयेगा कि हां तैयार हो! सब अचानक होना है। आप लोग भी ब्राह्मण कैसे बने? अचानक ही संदेश मिला, प्रदर्शनी देखी, संपर्क संबंध हुआ बदल गये। क्या सोचा था कि इस तारीख को ब्राह्मण बनेंगे? अचानक हो गया ना! तो परिवर्तन भी अचानक होना है। आपको पहले माया और ही अलबेला बनायेगी, सोचेंगे हमने तो 2000 सोचा था -वह भी पूरा हो गया, अभी तो थोड़ा रेस्ट कर लो। पहले माया अपना जादू फैलायेगी, अलबेला बनायेगी। किसी भी बात में, चाहे सेवा में, चाहे योग में, चाहे धारणा में, चाहे संबंध सम्पर्क में, यह तो चलता ही है, यह तो होता ही है... ऐसे पहले माया अलबेला बनाने की कोशिश करेगी। फिर अचानक विनाश होगा, फिर नहीं कहना कि बापदादा ने सुनाया ही नहीं, ऐसा भी होना है क्या! इसलिए पहले ही सुना देते हैं -अलबेले कभी भी किसी भी बात में नहीं बनना। चारों ही सब्जेकट में अलर्ट, अभी भी कुछ हो जाए तो अलर्ट। उस समय नहीं कहना बापदादा अभी आओ, अभी साथ निभाओ, अभी थोडी शक्ति दे दो, उस समय नहीं देंगे। अभी जितनी शक्ति चाहिए, जैसी चाहिए उतनी जमा कर लो। सबको खुली छुट्टी है, खुले भंडार है, जितनी शक्ति चाहिए, जो शक्ति चाहिए ले लो। पेपर के समय टीचर वा प्रिन्सीपल मदद नहीं करता। 18-01-98

लगाव मुक्त बन बेहद के वैरागी बनो ।

अभी समय प्रमाण सबको बेहद के वैराग्य वृत्ति में जाना ही होगा। लेकिन बापदादा समझते हैं कि बच्चों का समय शिक्षक नहीं बनें, जब बाप शिक्षक है तो समय पर बनना - यह समय को शिक्षक बनाना है। उसमें मार्क्स कम हो जाती हैं। अभी कई बच्चे कहते हैं - समय सिखा देगा, समय बदल देगा। समय के अनुसार तो सारे विश्व की आत्मायें बदलेंगी लेकिन आप बच्चे समय का इन्तज़ार नहीं करो।

समय को शिक्षक नहीं बनाओ। आप विश्व के शिक्षक के मास्टर विश्व शिक्षक हो, रचता हो, समय रचना है तो हे रचता आत्मायें रचना को शिक्षक नहीं बनाओ। ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेदह का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा। आदि में देखा इतना तन लगाया, मन लगाया, धन लगाया, लेकिन ज़रा भी लगाव नहीं रहा। तन के लिए सदा नेचुरल बोल यही रहा - बाबा का रथ है। मेरा शरीर है, नहीं। बाबा का रथ हैं। बाबा के रथ को खिलाता हूं, मैं खाता हूं, नहीं। तन से भी बेहद का वैराग्य। मन तो मनमनाभव था ही। धन भी लगाया, लेकिन कभी यह संकल्प भी नहीं आया कि मेरा धन लग रहा है। कभी वर्णन नहीं किया कि मेरा धन लग रहा है या मैंने धन लगाया है। बाबा का भण्डारा है, भोलेनाथ का भण्डारा है। धन को मेरा समझकर पर्सनल अपने प्रति एक रुपये की चीज भी यूज नहीं की। कन्याओं, माताओं की जिम्मेवारी है, कन्याओं-माताओं को विल किया, मेरापन नहीं। समय, श्वांस अपने प्रति नहीं, उससे भी बेहद के वैरागी रहे। इतना सब कुछ प्रकृति दासी होते हुए भी कोई एकस्ट्रा साधन यूज नहीं किया। सदा साधारण लाइफ में रहे। कोई स्पेशल चीज़ अपने कार्य में नहीं लगाई। वस्त्र तक, एक ही प्रकार के वस्त्र अन्त तक रहे। चेंज नहीं किया। बच्चों के लिए मकान बनाये लेकिन स्वयं यूज़ नहीं किया, बच्चों के कहने पर भी सुनते हुए उपराम रहे। सदा बच्चों का स्नेह देखते हुए भी यही शब्द रहे - सब बच्चों के लिए है। तो इसको कहा जाता है बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रत्यक्ष जीवन में रही। अन्त में देखो बच्चे सामने हैं, हाथ पकडा हुआ है लेकिन लगाव रहा? बेहद की वैराग्य वृत्ति। स्नेही बच्चे, अनन्य बच्चे सामने होते हुए फिर भी बेहद का वैराग्य रहा। सेकण्ड में उपराम वृत्ति का, बेहद के वैराग्य का सबूत देखा। एक ही लगन सेवा, सेवा और सेवा... और सभी बातों से उपराम। इसको कहा जाता है बेहद का वैराग्य। अभी समय प्रमाण बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बिना बेहद के वैराग्य वृत्ति के सकाश की सेवा हो नहीं सकती। फालो फादर करो। साकार में ब्रह्मा बाप रहा, निराकार की तो बात छोड़ो। साकार में सर्व प्राप्ति का साधन होते हुए, सर्व बच्चों की जिम्मेवारी होते हुए, सरकमस्टांस, समस्यायें आते हुए पास हो गये ना! पास विद ऑनर का सर्टिफिकेट ले लिया। विशेष कारण बेहद की वैराग्य वृत्ति। अभी सूक्ष्म

सोने की जंजीर के लगाव, बहुत महीन सूक्ष्म लगाव बहुत हैं। कई बच्चे तो लगाव को समझते भी नहीं हैं कि यह लगाव है। समझते हैं - यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। मुक्त होना है, नहीं। लेकिन ऐसे तो चलता ही हैं। अनेक प्रकार के लगाव बेहद के वैरागी बनने नहीं देते हैं। चाहना है बनें, संकल्प भी करते है - बनना ही है। लेकिन चाहना और करना दोनों का बेलेन्स नहीं है। चाहना ज्यादा है, करना कम है। करना ही हैं - यह वैराग्य वृत्ति अभी इमर्ज नहीं है। बीच-बीच में इमर्ज होती है, फिर मर्ज हो जाती है। समय तो करेगा ही लेकिन पास विद ऑनर नहीं बन सकते। पास होंगे लेकिन पास विद ऑनर नहीं। समय की रफ्तार तेज है, पुरुषार्थ की रफ्तार कम है। **मोटा-मोटा पुरुषार्थ तो है लेकिन सूक्ष्म लगाव में बँध जाते हैं।**

बापदादा जब बच्चों के गीत सुनते हैं – उड़ आयें, उड़ आयें... तो सोचते हैं उड़ा तो लें लेकिन लगाव उड़ने देंगे या न इधर के रहेंगे न उधर के रहेंगे? अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो! मन से वैराग्य हो। प्रोग्राम प्रमाण वैराग्य जो आता है वह अल्पकाल का होता है। चेक करो - अपने सूक्ष्म लगाव को। मोटी मोटी बातें अभी खत्म हुई हैं, कुछ बच्चे मोटे-मोटे लगाव से मुक्त हैं भी लेकिन सूक्ष्म लगाव बहुत सूक्ष्म हैं, जो स्वयं को भी चेक नहीं होते हैं। (मालूम नहीं पड़ते हैं)। चेक करो, अच्छी तरह से चेक करो। सम्पूर्णता के दर्पण से लगाव को चेक करो। यही ब्रह्मा बाप के स्मृति दिवस की गिफ्ट ब्रह्मा बाप को दो। **छोड़ो, सब किनारे छोड़ो।। मुक्त हो जाओ।**

दादीजी का क्लास (जुलाई-2000)

अब घर चलने की तैयारी करो उपराम रहो - बेहद के वैरागी बनो

- सारे दिन में 4 प्रहर, 6-6 घंटे की होती हैं तो एक प्रहर का यह पुरुषार्थ हो। इसका हर एक कंगन बाँधो। जैसे बाबा ने कहा है, ऐसे सुबह 4 से 8 बजे तक किसी विशेष व्यवहार में नहीं आओ, उस समय मौन में रहो, फिर रात्रि के समय भी मौन में रह सकते हो। इसलिए हमारा विचार है कि खास 21 दिन का ऐसा प्रोग्राम

बनाओ। हम सहजयोगी हैं लेकिन हमें भी स्वयं के संस्कारो को परिवर्तन करने के लिये योग साधना जरुर करनी चाहिए। हम करेंगे तो हमे देख दूसरे करेंगे।

आप सबको एक संकल्प सुनाती-पता नहीं आपको भी आता हैं या नहीं। मुझे तो रोज आता जैसे बाबा कानों में कह रहा हैं-बच्ची एवररेडी हो ! ड्रामा को भी देखते, ज्ञान के हिसाब से भी अभी 5000 वर्ष का चक्र पूरा हो रहा है तो यही संकल्प आता कि अभी टू लेट का बोर्ड लगने वाला है। यह भी दिखाई देता कि अब धर्मराज का पार्ट भी जल्दी ही खुलने वाला हैं। एडवान्स पार्टी भी जा चुकी है, उसकी भी तैयारियाँ पूरी हो चुकी हैं। सभी महारथियों को बाबा ने अचानक बुला लिया। अब हम सबको भी आखिर यहाँ कब तक रहना है। सभी दादियों की वानप्रस्थ अवस्था भी देख रहे हो। ज्ञान सरोवर, शान्तिवन, बाबा के एशलम स्थान अथवा अंतिम यात्रा के स्थान भी बनकर तैयार हो गये हैं। यह भी अन्त में सबको योग की किरणें देंगे। एशलम बनेंगे।

तो रोज जैसे बाबा यह महावाक्य कानों में कहता है कि बच्चे अब अंतिम यात्रा की तैयारी करो। अपने सर्व साथियों को तैयार करो। सेवायें तो बाबा आपे ही करता कराता रहता हैं। सेवा तो चरणों में आपे ही आनी है। सर्विस के पीछे तो बहुत प्लैन प्रोग्राम बनाये, पुरुषार्थ किया। सर्विस तो चलती ही रहेगी। तो जैसे सर्विस के पीछे जी-जान लगाया ऐसे अब अपनी स्थिति बनाओ। अव्यक्त स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करो। अब हर एक रेडी हो जाओ। अब सर्विस प्लैन की मीटिंग नहीं लेकिन अपनी ऊँची स्व-स्थिति बनाने की मीटिंग करो। ऐसी ऊँची स्थिति हो तो जो भी छोटी-मोटी बातें आती हैं, वह सब आपेही खत्म हो जायेंगी। यही रिटर्न हमारा बाबा तक पहुँचे। इसके लिए उपराम रहो, वैरागी बनो। अन्डरग्राउन्ड चले जाओ। अलबेलेपन को दिल से त्याग दो। एकाग्रता का अभ्यास करो। हमें यह बार बार बाबा की आवाज सुनाई देती हैं, ऐसे आप सबको भी कानों में आवाज आ रहा है ?तो जैसे बाबा इशारा कर रहा हैं - बच्चे अब उपराम बनो। ऐसा वैराग्य आता है ? लगता है कि अब जीवन की यह अंतिम यात्रा हैं । ऐसी फीलिंग आती है ? हमें तो रोज आती

है। इसलिए ख्याल चलता है कि अब बाबा के सभी ब्राह्मण बच्चे व्यर्थ से मुक्त हो उपराम बन जाएं। अपने संकल्प, श्वांस समय को सफल कर लें, व्यर्थ नहीं गंवाये।

बापदादा के गंभीर इशारे -समय की समीपता..

4-9-05 से 28-3-06

- अपने आपको रियलाइज़ करो। रियलाइज़ अर्थात मैं जो हूँ, जैसा हूँ वैसे अपने को समझना। आत्मा हूँ, यह कॉमन हैं, लेकिन चलते फिरते महसूसता आत्म अभिमानी की रहती है? इसको कहेंगे रियलाइज़ेशन। संस्कार हैं, संस्कार का ज्ञान है, नालेज है, संस्कार समाप्त हुए हैं ? परिवर्तन हुआ है या नहीं ? यह अपने को महसूस हो, यह ठीक है, यही ठीक नहीं है। दूसरा महसूस करायेगा तो महसूस नहीं होता है। तो अपने आपको रियलाइज़ करने का पाठ पढ़ाना। जैसे सप्ताह कोर्स करते हो ना, आत्मा, परमात्मा, योग, ड्रामा ऐसे अपने आपको रियलाइज़ करो। अभी रियलाइज़ेशन का समय है। जो बाप चाहता है वह कर रहा हूँ ? सम्बंध सम्पर्क में भी रियलाइज़ करो, शुभ भावना, शुभ कामना हैं ? ठीक हैं। रियलाइज़ेशन कोर्स अपने आपका करो। दूसरा नहीं करा सकता यह। सब कोर्स किया अभी लास्ट कोर्स है,रियलाइज़ेशन कोर्स। चलाना नहीं अपने को, चलता है, हैं ही। समय धोखा नहीं दे देवे ना ! तो साथ चलने वाले हो ना ! बीच में अटकने वाले तो नहीं हो ना ! तो रियलाइज़ेशन कोर्स अपने आपका शुरु करो। एक-एक बात में रियलाइज़ करो।

04-9-05

- बापदादा की यही शुभ आशा है कि अब समय को देखते हुए जो महारथी समझते हैं अपने को, उन्हों की स्टेज तो 95 परसेन्ट होनी चाहिए। होनी चाहिए ना ! आप भी 75 समझते हो ? अच्छा कल विनाश हो जाए तो ? तो 75 परसेन्ट में जायेंगे ना ? परसों अगर विनाश करें, तो 85 तक होंगे ?

- मीटिंग तो बहुत करते हो। बापदादा देखते हैं मीटिंग, सीटिंग। लेकिन अब ऐसी मीटिंग करो, कि कब तक सम्पन्न बनेंगे ? और सब फंक्शन मनाते हो, डेट फिक्स करते हो, फलाना प्रोग्राम फलानी डेट, इसकी डेट नहीं हैं ? जितने साल

चाहिए उतने बताओ। क्यों ? बापदादा क्यों कहते हैं ? क्योंकि बाप से प्रकृति पूछती हैं कि कब तक विनाश करें ? तो बापदादा क्या जबाब दे बापदादा बच्चों से ही पूछेंगे ना। कब तक ? आज की विशेष टॉपिक है “कब तक ?”

- बापदादा उमंग-उल्हास दिलाता है। माया देखती है उमंग उल्हास में है तो कुछ न कुछ कर लेती हैं क्योंकि उसका भी अभी अंतिम काल नजदीक है ना।

- समय की गति को ड्रामा अनुसार स्लो करना पड़ता है। होना चाहिए क्रियेटर को तीव्र, क्रियेशन को नहीं। लेकिन अभी के प्रमाण समय तेज जा रहा है। प्रकृति एवररेडी है सिर्फ ऑर्डर के लिए रुकी हुई है। ड्रामा का समय ही ऑर्डर करेगा ना। स्थापना वाले एवररेडी नहीं होंगे तो विनाश के बाद क्या प्रलय होगी ? तो स्थापना के निमित्त बने हुए अभी समय प्रमाण एवररेडी होने चाहिए। बापदादा यही देखने चाहते हैं, जैसे ब्रह्मा बाप अर्जुन बना ना, एग्ज़ाम्पल बना ना। ऐसे ब्रह्मा बाप को फॉलो करनेवाले कौन बनते हैं ? स्वयं को भी देखो, समय को भी देखो।

21-10-05

- सभी ने वायदा तो किया है ना ! कि साथ रहेंगे, साथ चलेंगे ? किया है, वायदा किया है ? साथ चलेंगे या पीछे पीछे आयेंगे ? जो साथ चलने के लिये तैयार हैं वह हाथ उठाओ। तैयार हैं अर्थात् बाप समान हैं। कौन साथ चलेगा ? समान साथ चलेगा ना ! तो चलेंगे ? एवररेडी ? एवररेडी ? कल चलने के लिए ऑर्डर करे, चलेंगे ? अच्छा, प्रवृत्तिवाले चलेंगे ? बच्चे नहीं याद आयेंगे ? मातायें चलेंगी ? टीचर्स को सेन्टर याद आयेगा, जिज्ञासु याद आयेंगे ?

- अभी सभी की कम्पलेन विशेष एक ही रह गई है, संस्कार नहीं बदलते, संस्कार नहीं बदलते। तो 70वें वर्ष में कुछ तो कमाल करेंगे ना। तो यह परिवर्तन की विशेषता दिखाओ। 15-11-05

- बापदादा यही चाहते हैं, पूछते हैं ना बाप क्या चाहते हैं हमसे ? तो बापदादा यही चाहते हैं कि समय से पहले सब एवररेडी बन जाओ। समय आपका

मास्टर नहीं बने। समय के मास्टर आप हो इसलिए यही बापदादा चाहते हैं कि समय के पहले सम्पन्न बन विश्व की स्टेज पर बाप के साथ साथ आप बच्चे भी प्रत्यक्ष हो। 30-11-05

- विश्व के आगे ताली बजे। सब के मुख से यह आवाज़ निकले, हमारे इष्ट आ गये। हमारे पूज्य आ गये। लक्ष्य पक्का है ना ! अभी सभी इंतजार कर रहे हैं, अभी इन्हों का इंतजार समाप्त करो। प्रत्यक्ष होने का इंतज़ाम करो। देखो प्रकृति भी अभी कितनी तंग हो रही है। तो प्रकृति को भी शांत बना दो। आप प्रत्यक्ष हो जायेंगे तो विश्व शांति स्वत: हो जायेगी।

- अभी पीछे आने वाले भी ऐसा लक्ष्य रखो। समय कम है इसलिए तीव्र पुरुषार्थ द्वारा नंबर आगे ले सकते हो। अभी भी टू लेट का बोर्ड नहीं लगा हैं, लेट का लगा है। इसलिए जितना पुरुषार्थ करना चाहो उतना आगे बढ़ सकते हो। तीव्र पुरुषार्थ करना है ना ! अभी ढीले पुरुषार्थ का समय गया, चलने का गया, अभी उड़ने का समय है। तो डबल लाईट बनके उड़ो। जो भी बनने चाहो, बन सकते हो। उल्हाना नहीं देना -बाबा हमको पीछे बुलाया, अभी भी डबल लाईट बनके उड़ सकते हो। 15-12-05

31-12-05 (होमवर्क न करनेवालों की सज़ा)

- तो अभी यह लास्ट टर्न में शुरु हो जायेगा। तो तीन मास बापदादा देते हैं, ठीक है देवें ? होमवर्क देंगे। क्योंकि यह बीच बीच का होमवर्क भी लास्ट पेपर में जमा होगा। तो तीन मास में हर एक अपना चार्ट चेक करना। तीन मास कोई भी पुराना संस्कार वार नहीं करे। अलबेले नहीं बनना, रॉयल अलबेलापन नहीं लाना, हो जायेगा। बापदादा से बहुत मीठी मीठी बातें करते हैं, कहते हैं बाबा आप फिकर नहीं करो, हो जाऊँगा। बापदादा क्या करेगा ? सुनकर मुस्करा देता है। लेकिन बापदादा इन तीन मास में अगर ऐसी बात की तो मानेगा नहीं। अगर नहीं करेंगे तो क्या करें ? वह भी बता दो। फिर बापदादा की सीजन में एक बार आने नहीं देंगे। क्योंकि बापदादा देख रहे हैं कि समय आपका इंतजार कर रहा हैं। आप समय का इंतजार करने वाले नहीं हो, आप इंतज़ाम करनेवाले हो, समय आपका इंतजार कर रहा हैं। प्रकृति भी,

सतोप्रधान प्रकृति आपका आह्वान कर रही है। तो तीन मास में अपनी शक्तिशाली स्टेज में, रहे हुए संस्कार को परिवर्तन करना।

- आप बाप समान बन गये हो ? पर्दा खोलें ? कि पर्दा खोलेंगे तो कोई कंघी कर रहा है, कोई फेस को क्रीम लगा रहा हैं, अगर एवररेडी हो, संस्कार समाप्त हो गये तो बापदादा को पर्दा खोलने में क्या देरी लगेगी। एवररेडी तो हो जाओ ना ! हो जायेंगे, हो जायेंगे कह कर बाप को बहुत समय खुश किया है। अभी ऐसा नहीं करना। होना ही है, करना ही है।

प्रत्यक्षता का झंडा आरंभ ही ईस्टर्न से हो, फैलेगा तो विश्व में ही। एक-एक स्टेट में ग्रुप बनाओ, जो मन, वाणी, कर्म, सम्बंध, सम्पर्क में तीव्र पुरुषार्थी हो। फिर उन्हों का संगठन करो, एक दो में राय लो, दो तो हो जायेगा। करना तो पडेगा। तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ेगा। यह आवाज़ कोई भी रेडियो खोले, कोई भी टी.वी. का स्वीच खोले तो यह आवाज़ आवे “हमारा शिवबाबा आ गया” तब कहेंगे प्रत्यक्षता का झंडा लहराया। यह धूम मचनी चाहिए, आ गया, आ गया, आ गया। 18-01-06

- लीकेज विशेष दो बातों की हैं -वह दो बातें हैं -संकल्प और समय वेस्ट जाता है। क्योंकि जानते हो कि यही थोड़ा सा समय है पुरुषोत्तम कल्याणकारी जमा करने का समय है। अब नहीं तो कब नहीं, यह हर घड़ी याद रहे।

(कम से कम 108 रत्न तो सफलतामूर्त की सेरीमनी मनायें)

- तो इस बारी सिर्फ सर्विस के प्लैन की मीटिंग बापदादा नहीं देखने चाहते, सर्विस के प्लैन बनाओ लेकिन मीटिंग में सफलता की सेरीमनी का प्लैन बनाओ। बहुत सेरीमनी कर ली अब सफलता की सेरेमनी की डेट फिक्स करो। चलो सोचते हैं कि सभी कैसे होंगे ! बापदादा कहते हैं कम से कम 108 रत्न तो सफलतामूर्त की सेरीमनी मनायें। एग्ज़ाम्पल बनें। कोई संस्कार नहीं रहेगा, कोई कमज़ोरी नहीं रहेगी। इसमें करना पहले मैं। इसमें दूसरे को नहीं देखना, पहले मैं।

- वर्तमान समय को तो देख रहे हो, दिन प्रतिदिन चारों ओर मनुष्य आत्माओं में निराशा बहुत बढ़ रही है। चारों ओर मनुष्य आत्माओं के मन में आशा का दीपक जग जाये। वायुमण्डल में कम से कम यह आशा का दीपक जग जाये तो अब विश्व परिवर्तन हुआ कि हुआ। गोल्डन सवेरा आया कि आया। क्योंकि समय अचानक होनेवाला है। 03-02-06

- बापदादा आजकल के समय की समीपता प्रमाण बार बार अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि सम्पूर्ण पवित्रता के हिसाब से व्यर्थ संकल्प, यह भी संपूर्णता नहीं हैं।

- कार्य बहुत अच्छा है। जो कार्य कर रही हैं ब्रह्माकुमारियाँ, वह कार्य कोई कर नहीं सकता, परिवर्तन कराती हैं। लेकिन परमात्मा बोल रहा है, परमात्मा से वर्सा लेना है, इतना नज़दीक नहीं आते। लेकिन परमात्म-प्रत्यक्षता, अगर समझ सकते कि परमात्मा का ज्ञान है तो रुक सकते हैं क्या ! जैसे आप भागकर आ गये हो ना। ऐसे भागेंगे।

- परमात्मा आ चुका है। बाप को प्रत्यक्ष कौन सा ज़ोन करता है, वह बापदादा देख रहे हैं। बहुत समय से प्रयत्न कर रहे हैं, यही है, यही है, यही है, यह आवाज़ फैलाने का। अभी है यह भी है, यही है नहीं है। यह भी हैं, यह तो बहुत सुन लिया। जैसे आपके मन में बस बाबा, बाबा, बाबा स्वतः याद रहता है ऐसे उनके मुख से निकले हमारा बाबा आ गया। वह भी सभी मेरा बाबा, मेरा बाबा, यह आवाज़ चारों कोनों से निकले, लेकिन शुरुआत तो एक कोने से होगी ना।

- कमाल यह है कि जैसे साइन्स प्रत्यक्ष प्रमाण दिखा रही है, ऐसे सायलेन्स पावर ऐसा प्रेक्टिकल में अनुभव फैलाओ जो हर एक के मुख से निकले कि साइंस तो साइंस है लेकिन सायलेन्स अपरम अपार है क्योंकि धर्मवाले और साइंसवाले दोनों को प्रेक्टिकल में सायलेन्स का चमत्कार नहीं, लेकिन सायलेन्स का कार्य सिद्ध करके दिखाना पड़ेगा। धर्मवालों को प्रेक्टिकल में एक परमात्मा है और परमात्मा का कार्य चल रहा है यह सिद्ध करके दिखाना पड़ेगा। अनेक तरफ से बुद्धि हटकर एक तरफ लग जाए । एकाग्र बुद्धि हो जाऐ। अभी समय की रफ्तार तेज जा रही है तो समय के

प्रमाण अभी ऐसा कोई प्लैन बनाओ जो सबकी बुद्धि में परमात्मा के सिवाय और कुछ सूझे नहीं, मैजोरिटी के मुख से बाबा, बाबा निकले। अभी फास्ट करना पड़ेगा। साइंस भी देखो, समय को, चीज़ों को बिल्कुल सूक्ष्म बनाती जाती है ना। तो सायलेन्स पावर कितना शक्तिशाली बना रही है। यह अनुभव कराओ। सुनाया था तो जिसके हाथ में अखबार आये, जिसके रेडियो का स्वीच खुले, टी.वी. का स्वीच खुले आवाज आये हमारा बाबा आ गया। सम्पन्न बन जायेंगे जल्दी-जल्दी तो यह कार्य भी हो जायेगा। क्योंकि कनेक्शन है, आपका सम्पन्न बनना और प्रत्यक्षता का झंडा लहराना। ऐसे मन का झंडा शिवबाबा, शिवबाबा में एकाग्र हो जाये, आ रहा है, समय समीप आ रहा है।

25-02-06

- वेस्ट थॉट्स का केक काटा ? काटना तो पड़ेगा ना ! क्योंकि साथ चलना है, यह तो पक्का वायदा है ना ! कि साथ हैं, साथ चलेंगे। साथ चलना है तो समान तो बनना पड़ेगा ना।

- बापदादा का प्यार है ना तो बापदादा समझते हैं सब इकट्ठे चलें, कोई रह नहीं जाये। जब वायदा किया है, साथ चलेंगे, तो समान तो बनना ही पड़ेगा।

- हल्का नहीं छोड़ना यह तो होता ही हैं। इतना तो चलेगा, नहीं। व्यर्थ संकल्प अंतिम घड़ी में बहुत धोखा दे सकता है। क्योंकि चारों ओर अपने तरफ (1) दु:ख का वायुमण्डल (2) प्रकृति का वायुमण्डल (3) आत्माओं का वायुमण्डल आकर्षण करनेवाला होगा। अगर वेस्ट थॉट्स की आदत होगी तो वेस्ट में ही उलझ जायेंगे।

- ऐसा नक्शा दिखाई दे कि यह दुआयें देनेवाला और दुआयें लेनेवाला ब्राह्मण परिवार है। क्योंकि समय भी पुकार रहा है, बापदादा के पास तो एडवान्स पार्टी वालों की भी दिल की पुकार हैं। माया भी अभी थक गई हैं। वह भी चाहती हैं कि अभी हमें भी मुक्ति दे दो। तो बापदादा कहते हैं, हे मास्टर मुक्तिदाता अभी सबको मुक्ति दे दो। क्योंकि सारे विश्व को कुछ न कुछ प्राप्ति की अंचली देनी हैं, कितना काम करना है। क्योंकि इस समय, समय आपका साथी है, सर्व आत्माओं को मुक्ति

में जाना ही है, समय है। दूसरे समय में अगर आप पुरुषार्थ करो, तो समय नहीं है। इसलिए आप दे नहीं सकते। अब समय है इसलिए बापदादा कहते हैं पहले स्व को मुक्ति दो, फिर विश्व की सर्व आत्माओं को प्राप्ति, मुक्ति देने की अंचली दो। वह पुकार रहे हैं, आपको क्या दु:खियों की पुकार का आवाज़ नहीं आता ? अगर अपने में ही बिज़ी होंगे तो आवाज़ सुनने नहीं आता। बार-बार गीत गा रहे हैं, दुखियों पर कुछ रहम करो। अभी से दयालु, कृपालु, मर्सीफुल संस्कार बहुत काल से नहीं भरेंगे तो आपके जड़ चित्र में मर्सीफुल का, कृपा का, रहम का, दया का वायब्रेशन कैसे भरेगा। थोड़ा-थोड़ा और कहाँ बिज़ी हो जाते हो। अभी अपने को अपने पुरुषार्थ में समय ज्यादा नहीं लगाओ। देने में लगाओ, तो देना लेना हो जायेगा। छोटी-छोटी बातें नहीं, मुक्ति दिन मनाओ क्योंकि समय पर तो कोई भरोसा नहीं।

- ऐसा दिन आना ही है जो आपके दिल के प्यार का वायुमण्डल सबको चुम्बक का काम करेगा और सभी अपने मुख से कहेंगे, आ गया, आ गया, हमारा बाबा आ गया। अभी तो यह झंडा लहरा रहा है, अभी जल्दी प्रत्यक्षता का झंडा लहरायेंगे। क्योंकि बाप के ऊपर हक तो सभी बच्चों का लगता है और बाप को कुछ न कुछ प्राप्ति करानी भी है तो आपको जीवनमुक्ति, उन्हों को मुक्ति, वह मुक्ति में ही खुश हैं और आप जीवनमुक्ति में खुश हैं।

- इतने विदेश के एक समय आयेंगे, यह संकल्प पूरा हो गया है।

14-03-06

- साथ-साथ स्व उन्नति का प्लैन बनाना बहुत आवश्यक हैं। बापदादा यही इशारा देते हैं कि हर वर्ग अपने स्व उन्नति का कोई भी प्लैन बनाओ। इसलिए समय की समीपता को सामने देखते हुए सेवा और स्व उन्नति को कम्बाइन्ड रखो। सिर्फ स्व उन्नति भी नहीं चाहिए, सेवा भी चाहिए लेकिन स्व उन्नति की स्थिति से सेवा में सफलता अधिक होगी।

- बापदादा देख रहे हैं, आपके ही अनेक भाई-बहनें, ब्राह्मण नहीं । अज्ञानी आत्मायें, अपनी जीवन से हिम्मत हार चुकी हैं। अभी उन्हों को हिम्मत के पंख लगाने

पड़ेंगे। बिल्कुल बेसहारे हो गये हैं, नाउम्मीद हो गये हैं। तो हे रहमदिल, कृपा, दया करनेवाले, विश्व की आत्माओं के इष्ट देव आत्मायें, अपनी शुभ भावना, रहम की भावना, आत्म भावना द्वारा उन्हों की भावना पूर्ण करो। आपको वायब्रेशन नहीं आता दु:ख, अशांति का? निमित्त आत्मायें हो, पूर्वज हो, पूज्य हो, वृक्ष के तना हो, फाउन्डेशन हो। सब आपको ढूँढ रहे हैं, कहाँ गये हमारे रक्षक। कहाँ गये हमारे इष्ट देव। बाप को तो बहुत पुकारें सुनने आती हैं। भटकती हुई आत्माओं को ठिकाने की राह बताओ। अटेन्शन प्लीज़, मैं को जलाओ। बाबा, बाबा और बाबा ।

28-3-06 (बापदादा ने टीचर रुप धारण किया)

- अभी समय समीप आना नहीं है, आपको लाना है। तो बाप बच्चों से प्रश्न करता है, बाप से तो प्रश्न बहुत करते हैं ना तो आज बाप बच्चों से प्रश्न करता है - समय को समीप लानेवाले कौन ? ड्रामा है लेकिन निमित्त कौन ? आपका एक गीत भी है, किसके रोके रुका है सवेरा। है ना गीत ? तो सवेरा लाने वाला कौन ? विनाशकारी तो तड़प रहे हैं कि विनाश करें, विनाश करें... लेकिन नव निर्माण करने वाले इतना रेडी हैं ? क्या पुराना खत्म हो जाए, नया निर्माण हो नहीं तो क्या होगा ? इसलिए बापदादा ने अभी बाप के बजाय टीचर का रुप धारण किया है। होमवर्क दिया है ना? कौन होमवर्क देता है ? टीचर। लास्ट में है सतगुरु का पार्ट, तो अपने आप से पूछो सम्पन्न और सम्पूर्ण स्टेज कहाँ तक बनी है ? आप का भी लक्ष्य यही है ना कि जल्दी से जल्दी प्रत्यक्षता हो। इसलिए बापदादा होमवर्क देते हैं। सतगुरु का पार्ट चलेगा तो समाप्ति हो जायेगी। इसके लिए सबको तैयार कर रहे हैं। बापदादा को स्वरुप ऑफिशियल धारण करना पड़ता हैं।

- कई बच्चों को तो देखा कई बच्चे तो मौजीराम हैं, मौज़ में चल रहे हैं। अभी तो मौज़ मना लो। सतयुग में कौन देखता है, कौन जानता। तो जमा के खाते में ऐसे मौजीलाल कहो, मौजीराम कहो ऐसे भी बच्चे देखे। तो ऐसे नहीं बनना। अतीन्द्रिय सुख के मौज़ के झूले में झूलो। अविनाशी प्राप्तियों के झूलों की मौज़ में झूलो। ड्रामा में देखो, माया का पार्ट भी विचित्र हैं। इसी समय ऐसे ऐसे साधन निकले

हैं, जो पहले थे ही नहीं। लेकिन बिना साधन के भी जिन्होंने साधना की, सेवा की वह भी तो एग्ज़ाम्पल सामने हैं ना। यह साधनों की आकर्षण है। साधनों को यूज़ करना राँग नहीं कहते हैं। लेकिन साधना को भूल साधन में लग जाना, इसको बापदादा राँग कहते हैं। साधन जीवन के उड़ती कला का साधन नहीं है, आधार नहीं हैं। साधना आधार है।

- बापदादा बच्चों से प्रश्न पूछता है - कब तक हर एक स्वयं को सम्पन्न और सम्पूर्ण बनायेंगे? दूसरे को नहीं देखो, यह अलबेलापन आ जाता है। दूसरे भी करते हैं, मैंने किया तो क्या हुआ ! यह अलबेलापन है। मुझे स्व को सम्पन्न बनाना ही है।

(होमवर्क नहीं करने की सज़ा)

- बापदादा को यह खुशी है और दिल की दुआयें दे रहे हैं, अब प्रेक्टिकल करके दिखाना। फिर बापदादा आयेगा। अभी टीचर बनेगा। ऐसे नहीं आयेगा। नहीं तो फिर ऐसा करेंगे, तो जो लिखेंगे एवररेडी उन्हों से बापदादा मिलेंगे औरों से नहीं। चाहे मधुबन में हो, चाहे कहाँ भी हो, ठीक हैं। बापदादा सबका सम्पन्न स्वरुप देखेगा। एवररेडी होंगे ? क्योंकि बहुत दु:ख बढ़ रहा है। आप आवाज़ नहीं सुनते हो ना, बापदादा सुनता है। बिलकुल हिम्मतहीन, दिलशिकस्त हो गये हैं।

- अभी धीरे धीरे चलने का समय गया, अभी उड़ो।

बापदादा के गंभीर इशारे - समय की समीपता

31-10-06 से 31-3-07

- वर्तमान समय इन खज़ानों के मैजोरिटी आप सबके आत्मिक भाई और बहनें प्यासी हैं। तो क्या अपने भाई-बहनों के ऊपर तरस नहीं पड़ता। क्या प्यासी आत्माओं की प्यास नहीं बुझायेंगे? कानों में आवाज़ नहीं आता - हे हमारे देव देवियां हमें शक्ति दो, सच्चा प्यार दो। आपके भक्त और दु:खी आत्मायें दोनों ही दया करो,

कृपा करो, हे कृपा के देव और देवियां कहकर चिल्ला रहे हैं। समय की पुकार सुनाई देती है ना! और समय भी देने का अब है। फिर कब देंगे? उस समय सिर्फ अंचली दे सकेंगे।

- क्या अभी तक अपनी छोटी छोटी समस्याओं में पुरुषार्थी रहेंगे ! अब पुरुषार्थ करो अखण्ड महादानी, अखण्ड सहयोगी। ब्राह्मणों में सहयोगी बनो ओर दुःखी आत्मायें, प्यासी आत्माओं के लिये महादानी बनो। अब इस पुरुषार्थ की आवश्यकता है। अभी कुछ चेंज भी करना चाहिए ना, वही स्व प्रति पुरुषार्थ बहुत टाइम किया।

- अब से संकल्प करो - मेरा समय, संकल्प विश्व प्रति, विश्व की सेवा प्रति। इसमें स्व का ओटोमेटिक हो ही जायेगा, रहेगा नहीं, बढ़ेगा।

- आप तो टू लेट से पहले आ गये हो, चाहे अभी नये भी आये हैं लेकिन टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है। लेट का लगा है, टू लेट का नहीं लगा है। तो नया भी कोई मेकअप कर सकता हैं। गोल्डन चान्स हैं। लेकिन जल्दी में जल्दी टू लेट का बोर्ड लगना है, इसलिए पहले ही कर लो।

- क्योंकि समय के महत्व को भी जानते हो, अचानक होना है। कई भाई-बहनें सोचते हैं थोडा सा इशारा मिल जाये ना, 10 साल है, 20 साल है, कितना है, लेकिन बापदादा ने कह दिया है, अचानक होना है। एवररेडी रहना है। फास्ट गति करो अभी - स्वयं की भी, औरों को भी योग्य बनाने की।

- बाकी समय का बिगुल तो अचानक बजना है, उसके पहले अपने भाई-बहनों का कल्याण तो करना है ना। तरस आता है ना? अब छोटी छोटी बातों में टाईम नहीं लगाओ।

- अभी प्रेक्टिस चाहिए सेकन्ड की क्योंकि आगे जो फाईनल समय आने वाला है, जिसमें पास विद ऑनर का सर्टिफिकेट मिलना है, उसका अभ्यास अभी से करना है। सेकण्ड में जहाँ चाहे, जो स्थिति चाहिए उस स्थिति में स्थित हो जाए। तो एवररेडी। रेडी हो गए।

- ऐसे सारे दिन में सेकण्ड में स्थित हो सकते हैं! इसका अनुभव करते रहो कयोंकि अचानक कुछ भी होना है। ज्यादा समय नहीं मिलेगा। हलचल में सेकण्ड में अचल बन सके इसका अभ्यास स्वयं ही अपना समय निकाल बीच-बीच में करते रहो। इससे मन का कंट्रोल सहज हो जायेगा। कंट्रोलिंग पावर, रुलिंग पावर बढ़ती जायेगी।

- अभी उड़ने का ही समय है क्योंकि अचानक कुछ भी हो सकता है, हलचल का समय है। उसमें आप अचल। यही सब को वायब्रेशन आवे कि हम हलचल में हैं, यह अचल हैं। होना ही है।

31-10-06

- कितना समय बीत गया। 70वां साल मना रहे हो ना!

- तो समय का भी महत्व अटेन्शन में रखो। समय पूछ के नहीं आना है।

कई बच्चे अभी भी कहते हैं, सोचते हैं, कि थोडा सा अंदाज मालूम होना चाहिए। चलो 20 mाल है, 10 साल है, थोडा मालूम हो। लेकिन बापदादा कहते हैं समय का फाईनल विनाश का छोड़ो, आपको अपने शरीर के विनाश का पता है? कोई है जिसको पता है कि मैं फलाने तारीख में शरीर छोड़ूँगा, है पता? और आजकल तो ब्राह्मणों के जाने का भोग बहुत लगाते हो। कोई भरोसा नहीं। इसलिए समय का महत्व जानो। यह छोटा सा युग है आयु में छोटा, लेकिन बड़े ते बड़ी प्राप्ति का युग है क्योंकि बड़े ते बड़ा बाप इस छोटे से युग में ही आता है और बड़े युगों में नहीं आता हैं। यही छोटा सा युग है जिसमें सारे कल्प की प्राप्ति का बीज डालने का समय है।

- समय का महत्व है। अलबेला नहीं बनना। 70 साल बीत चुके हैं, अभी अगर अलबेले बने तो बहुत कुछ अपनी प्राप्ति कम कर देंगे। क्योंकि जितना आगे बढ़ते हैं ना उतना एक अलबेलापन, बहुत अच्छे हैं, बहुत अच्छे चल जायेंगे, पहुँच जायेंगे, देखना पीछे नहीं रहेंगे, हो जायेगा, यह अलबेलापन और रॉयल आलस्य। अलबेलापन और आलस्य। कब शब्द है आलस्य, अब शब्द है तुरंत दान महापुण्य।

- बापदादा अटेन्शन खिंचवा रहा हैं। इस सीज़न में न स्वमान से उतरना है, न समय के महत्व को भूलना है। अलर्ट, होशियार, खबरदार।

- क्योंकि बापदादा समझते हैं जिसने मेरा बाबा कहा, वह साथ में चले। बराती हो के नहीं चले। बापदादा के साथ श्रीमत का हाथ पकड़कर साथ चले और फिर ब्रह्मा बाप के साथ पहले राज्य में आवे। मज़ा तो पहले नये घर में होता है ना। एक मास के बाद भी कहते, एक मास पुराना है। नया घर, नई दुनिया, नई चाल, नया रसम रिवाज और ब्रह्मा बाप के साथ राज्य में आये। सभी कहते हैं ना, ब्रह्मा बाप से हमारा बहुत प्यार है। तो प्यार की निशानी क्या होती है? साथ रहें, साथ चलें, साथ आयें। यह है प्यार का सबूत। पसंद है? साथ रहना, साथ चलना, साथ आना, पसंद है? है पसंद? तो जो चीज़ पसंद होती हैं उसको छोड़ा थोड़े ही जाता है! तो बाप की हर बच्चे के साथ प्रीत की रीत यही है कि साथ चले, पीछे पीछे नहीं। अगर कुछ रह जायेगा तो धर्मराज की सज़ा के लिए रुकना पडेगा। हाथ में हाथ नहीं होगा, पीछे पीछे आयेंगे। मज़ा किसमें है ? साथ में हैं ना! तो पक्का वायदा है ना? पक्का वायदा है साथ चलना है या पीछे पीछे आना है? बापदादा यही चाहते हैं एक भी बच्चा पीछे नहीं रहे, सब साथ साथ चलें। एवरेडी रहना पडेगा।

- अभी सभी दृढ़ संकल्प करेंगे। दृढ़ संकल्प की स्थिति में स्थित होकर बैठो, करना ही है, चलना ही है। साथ चलना है।

- क्योंकि अभी समय के अनुसार एक ही समय डबल सेवा चाहिए। विश्व की भी और स्वयं की भी। सारे वर्ल्ड में सुख शान्ति की किरणें देना है।

- अभी थोड़ी फास्ट गति करो, फास्ट गति से आत्मायें निकलें, कम से कम इतना तो कहे कि हमारा बाबा आ गया। बाबा शब्द तो बोले दिल से। मुख से नहीं, दिल से।

- बापदादा यही देखना चाहते हैं कि इतनी करोड़ आत्माओं को कम से कम यह संदेश तो मिले। अभी काफी रहे हुए हैं, जैसे अफ्रीका ने किया, बापदादा ने सुना कि युरोप में भी कोई देश नहीं रहा है ना। युरोप और अफ्रीका दोनों तरफ कोई विशेष

देश नहीं रहे हैं, ऐसे सब तरफ होना चाहिए। संदेश तो पहुंचे ना! नहीं तो उल्हने बहुत मिलेंगे आपको। सब उल्हना देंगे हमारा बाप आया और आपने हमको सुनाया भी नहीं। उल्हना नहीं रह जाए। 16-11-06

- अभी तो समय की पुकार, भक्तों की पुकार, अपने मन की आवाज़ क्या आ रही है? अभी अभी सम्पन्न और समान बनना ही है। वा यह सोचते हैं बनेंगे, सोचेंगे, करेंगे.... अब समय के अनुसार हर समय - एवररेडी का पाठ पक्का रहना ही है।

- जैसे स्नेह की सब्जेक्ट में पास हैं, अब यह कमाल करो समान बनने की सब्जेक्ट में भी पास विद ऑनर बनके दिखाओ। पसंद हैं? समान बनना पसंद हैं? पसंद है लेकिन बनने में थोड़ा मुश्किल है! समान बन जाओ तो समाप्ति सामने आयेगी।

30-11-06

(संगमयुग की समाप्ति - क्यों?)

- यह पूँछ दिखाया है मैंपन का। जब तक महावीर इस पूँछ को नहीं जलायेंगे तो लंका अर्थात् पुरानी दुनिया भी समाप्त नहीं होगी। तो अभी इस मैं मैं की पूँछ को जलाओ तब समाप्ति समीप आयेगी। जलाने के लिए ज्वालामुखी तपस्या, साधारण याद नहीं, ज्वालामुखी याद की आवश्यकता है। इसीलिए ज्वालादेवी की भी यादगार है। शक्तिशाली याद। तो सुना क्या करना है? अब यह मन में धुन लगी हुई हो - समान बनना ही है, समाप्ति को समीप लाना ही है। आप कहेंगे संगमयुग तो बहुत अच्छा है ना तो समाप्ति क्यों हो? लेकिन आप बाप समान दयालु, कृपालु, रहमदिल आत्मायें हो, तो आज की दु:खी आत्मायें और भक्त आत्माओं के ऊपर हे रहमदिल आत्मायें रहम करो। मर्सीफुल बनो। दु:ख बढ़ता जा रहा है, दु:खियों पर रहम कर उन्हों को मुक्तिधाम में तो भेजो। सिर्फ वाणी की सेवा नहीं लेकिन अभी आवश्यकता है मन्सा और वाणी की सेवा साथ साथ हो। एक ही समय पर दोनों सेवा साथ हो। सिर्फ चांस मिले सेवा का, यह नहीं सोचो, चलते फिरते अपने चेहरे और चलन द्वारा

बाप का परिचय देते हुए चलो। आप का चेहरा बाप का परिचय दे। आप की चलन बाप को प्रत्यक्ष करती चले।

- पक्के हैं, पक्के रहेंगे, पक्के होके साथ चलेंगे।

- अभी तो सारा भारत आपके हाथ में आना है। खुद ही ऑफर करेंगे, आओ। अभी आपको थोड़ी मेहनत करनी पड़ती है, पर्चे आदि छपाने पड़ते हैं, मेहनत करनी पड़ती हैं। अभी आपे ही सब ऑफर करेंगे। बस अभी यह सीन रही हुई है कि सबके मुख से एक ही आवाज़ निकले हमारा बाबा आ गया। यह भी समीप आ रहा है, सिर्फ आप उड़ते रहो, फरिश्ते बनकर के उड़ते रहो तो उन्हों को फरिश्तों का साक्षात्कार होगा। 15-12-06

- आज की दुनिया में मैजोरिटी आत्मायें देखने और सुनने से थक गये हैं लेकिन अनुभव द्वारा प्राप्ति करना चाहते हैं।

- लेकिन स्वयं में परिवर्तन करने की शक्ति और वर्तमान समय के महत्व को जानते हुए परिवर्तन करने में समय लगाना नहीं चाहिए। सेकण्ड में परिवर्तन की शक्ति। अभी तीव्र गति का समय है, तीव्र पुरुषार्थ का समय है, साधारण पुरुषार्थ का समय नहीं है, सेकण्ड में परिवर्तन का अर्थ है - स्मृति स्वरुप द्वारा एक सेकण्ड में निर्विकल्प, व्यर्थ संकल्प निवृत्त हो जाये, क्यों? समय को, समाप्ति को समीप लाने वाले निमित्त हो। जैसे साइन्स वाले सब बातों में तीव्र गति कर रहे हैं, और परिवर्तन की शक्ति भी ज्यादा कार्य में लगा रहे हैं तो सायलेन्स की शक्ति वाले अभी लक्ष्य रखो अगर परिवर्तन करना है, नॉलेजफुल हो तो अभी पॉवरफुल बनो, सेकण्ड की गति से। कर रहे हैं, हो जायेंगे... कर लेंगे... नहीं। हो सकता है या मुश्किल है? क्योंकि लास्ट समय सेकण्ड का पेपर आना है, मिनट का नहीं, तो सेकण्ड का अभ्यास बहुतकाल का होगा तब तो सेकन्ड में पास विद ऑनर बनेंगे ना।

- अभी बापदादा इशारा दे रहे हैं कि परिवर्तन की मशीनरी तीव्र करो। नहीं तो पास विद ऑनर होने में मुश्किल हो जायेगा। बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। सोचा और किया। सिर्फ सोचना स्वरुप नहीं बनो, समर्थ स्मृति सो समर्थ स्वरुप बनो।

व्यर्थ को तीव्र गति से समाप्त करो। व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म, व्यर्थ समय और संबंध सम्पर्क में भी व्यर्थ विधि, रीति सब समाप्त करो। जब ब्राह्मण आत्मायें तीव्र गति से यह स्व के व्यर्थ की समाप्ति करेंगे तब आत्माओं की दुआयें और अपने पुण्य का खाता तीव्र गति से जमा करेंगे।

- इसलिए बापदादा आज यही स्लोगन याद दिला रहे हैं कि अब तीव्र बनो, तीव्र पुरुषार्थी बनो। तीव्र गति से समाप्ति वाले बनो। तीव्र गति से मन्सा द्वारा वायुमण्डल परिवर्तन वाले बनो।

- मन में तो सभी जानते हैं, क्या करना है क्या नहीं करना है, बापदादा क्या चाहते हैं, समझते तो सभी हैं, अभी सिर्फ करना है। नॉलेजफुल हो लेकिन अभी पॉवरफुल बनना।

- अभी जल्दी करना है, बस। कभी कभी थोड़ा ढीला पड़ जाते हैं। अभी ढीले पड़ने का समय नहीं है। बातें तो भिन्न-भिन्न होती हैं लेकिन हमें बातों का राज़ समझ राज़युक्त, योगयुक्त, स्नेहयुक्त, सहयोगयुक्त बन चलना है। 31-12-06

- बाप भी यही चाहते हैं कि इस नये वर्ष में 70 वर्ष पूरे हो रहे हैं अब 71 वर्ष में कोई कमाल करके दिखाओ। किसलिये सेवा करते हो? तो क्या जवाब देते हैं? बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए। तो बाप आज बच्चों से प्रश्न पूछते हैं, बाप को प्रत्यक्ष तो करना ही है, करेंगे ही। लेकिन बाप को प्रत्यक्ष करने के पहले स्व को प्रत्यक्ष करो। करना ही है, करना पड़ेगा।

(बाबा परिवर्तन चाहते हैं - मुक्ति धाम का गेट खोलो)

- सिर्फ अपने को नहीं बनाना, साथियों को भी बनाना क्योंकि बापदादा ने देखा कि बच्चों के परिवर्तन बिना विश्व का परिवर्तन भी ढीला हो रहा है। और आत्मायें नये नये प्रकार के दु:ख के पात्र बन रही हैं। दु:ख अशांति के नये नये कारण बन रहे हैं। तो बाप अभी बच्चों के दु:ख की पुकार सुनते हुए परिवर्तन चाहते हैं। तो हे मास्टर सुखदाता बच्चे, दुखियों पर रहम करो। भक्त भी भक्ति कर कर के थक गये

हैं। भक्तों को भी मुक्ति का वर्सा दिलाओ। रहम आता है कि नहीं? अपनी ही सेवा में, अपनी ही दिनचर्या में बिजी हैं? निमित्त हो, ऐसे नहीं बड़े निमित्त हैं, एक एक बच्चा जिसने मेरा बाबा कहा है, माना है वह सब निमित्त हैं। तो नये वर्ष में एक दो को गिफ्ट भी देते हैं ना। तो आप भक्तों की आश पूरी करो उनको गिफ्ट दिलाओ। दु:खियों को दु:ख से छुड़ाओ, मुक्तिधाम में शान्ति दिलाओ - यह गिफ्ट दो। ब्राह्मण परिवार में हर आत्मा को दिल के स्नेह और सहयोग की गिफ्ट दो।

- बस सिर्फ ओ.के.। बाप भी ओ.के. वालों को गुप्त में बहुत स्नेह की दुआओं की वर्षा करते हैं। वाह! बच्चे वाह! का गीत गाते हैं। चाहे भारतवाले, चाहे विदेशवाले लेकिन कोई कोई बच्चे गुप्त रीति से तीव्र पुरुषार्थ कर रहे हैं और बापदादा के पास लिस्ट भी है, भारत में भी हैं, विदेश में भी हैं लेकिन बापदादा अभी बहुतकाल देखने चाहते हैं, कर रहे हैं लेकिन बहुतकाल चाहिए। तो बहुतकाल बापदादा नोट कर रहे हैं, कि बहुतकाल के तीव्र पुरुषार्थी कौन कौन हैं। बीच बीच में अगर ढीले हो जाते हैं तो बहुत काल तो कट हो जाता है ना। इसलिए बापदादा लिस्ट निकाल रहा हैं, अभी थोड़े हैं। बनना तो सबको है। भारतवालों को भी बनना है, विदेशवालों को भी बनना है, लेकिन कोई कोई गुप्त अच्छे हैं। बापदादा गिनती करते रहते हैं, कितने बच्चे हैं ऐसे। अभी बहुतकाल पर अटेन्शन रखो। क्योंकि बहुतकाल के विजयी बहुतकाल के राज्य भाग्य के अधिकारी बनेंगे। अभी टेन्शन खत्म, अटेन्शन। ऐसी लिस्ट में आ जाओ, बहुतकाल के तीव्र पुरुषार्थी।

- जो भी आपको देखें, कहें यह तो फरिश्ता हैं। फरिश्ता फरिश्ता दिखाई दो। फरिश्ते की चाल उड़ती कला। नीचे उपर नहीं। उड़नेवाले और उड़ानेवाले। कमज़ोर को भी उड़ानेवाले। नीचे आनेवाले नहीं।

- ऐसे आप भी इस वर्ष किसी से भी न दिलशिकस्त होना, न थकना, स्नेह और सहयोग देते रहना। पॉजिटिव में परिवर्तन करते रहना, निगेटिव नहीं देखना। तो देखना इस वर्ष में ही समय को समीप ले आयेंगे।

- सदा इस वर्ष में उड़ते रहना, उड़ाते रहना। सभी आत्माओं को अपनी मन की कामनायें पूर्ण करने वाले दाता के बच्चे मास्टर दाता बन सुख, शान्ति, प्यार, दुआयें देते रहना और हर एक को बाप का परिचय देते हुए मुक्ति का वर्सा देते रहना। 18-01-07

- अभी 70 साल पूरे हो रहे हैं, तो बापदादा इस वर्ष को न्यारा वर्ष, सर्व का प्यारा वर्ष, मेहनत से मुक्त वर्ष, समस्या से मुक्त वर्ष मनाने चाहते हैं। आप सभी को पसंद हैं? पसंद हैं? मुक्ति वर्ष मनायेंगे? क्योंकि मुक्तिधाम में जाना है, अनेक दुःखी अशान्त आत्माओं को मुक्तिदाता बाप के साथी बन मुक्ति दिलाना है। तो मास्टर मुक्तिदाता जब स्वयं मुक्त बनेंगे तब तो मुक्ति वर्ष मनायेंगे ना ! क्योंकि आप ब्राह्मण आत्मायें स्वयं मुक्त बन अनेकों को मुक्ति दिलाने के निमित्त हो।

- देखो जैसे एक तरफ साइन्स, दूसरे तरफ भ्रष्टाचारी, तीसरे तरफ पापाचारी, सब अपने अपने कार्य में और वृद्धि करते जा रहे हैं। बहुत नये नये प्लैन बनाते जाते हैं। तो आप तो क्रियेटर के बच्चे हो, वर्ल्ड क्रियेटर के बच्चे हो तो आप इस वर्ष ऐसी नवीनता के साधन अपनाओ जो प्रतिज्ञा दृढ़ हो जाए।

- सभी पूछते हैं ना कि बाबा आपकी क्या आशा है। तो बापदादा आशा सुना रहे हैं। बापदादा की एक ही आशा है निवारण दिखाई देवे, कारण ख़त्म हो जाए। समस्या समाप्त हो जाए, समाधान होता रहे। हो सकता है? हो सकता है?

- बनना तो पड़ेगा आपको। अभी सिर्फ जल्दी बन जाओ।

- आज के दिन एडवान्स पार्टी भी बापदादा के पास इमर्ज होती है। तो एडवान्स पार्टी भी आपको याद कर रही है कि कब बाप के साथ मुक्तिधाम का दरवाज़ा खोलेंगे ! आज सारी एडवान्स पार्टी बापदादा को यही कह रही थी कि हमको तारीख बताओ। तो क्या जवाब दें? बताओ क्या जवाब दें? जवाब देने में कौन होशियार हैं? बापदादा तो यही उत्तर देते हैं कि जल्द से जल्द हो ही जायेगा लेकिन इसमें आप बच्चों का बाप को सहयोग चाहिए। सभी साथ चलेंगे ना ! साथ चलने वाले हैं या रुक-रुक कर चलने वाले हैं? साथ में चलने वाले हैं ना ! पसंद है ना साथ

में चलना? तो समान तो बनना पड़ेगा ना। अगर साथ में चलना है तो समान तो बनना ही पड़ेगा ना। क्यों साथ चलना है ना। अकेला बाप जाना चाहे तो चला जायें लेकिन बाप जा नहीं सकता। साथ चलना है वायदा है बाप का भी और आप बच्चों का भी। वायदा तो निभाना है ना! निभाना है ना?

- मधुबन में जो भी चार्ज के हेड्स हैं, चार्जेज तो बहुत हैं ना, शांतिवन, ज्ञान सरोवर, पांडव भवन सब जगह हैं। तो जो चार्ज वाले हैं उनके नामों की लिस्ट बापदादा को देना, उनसे हिसाब लेंगे। और जो भी सभी टीचर्स इन्चार्ज हैं, सेन्टर इन्चार्ज हैं या ज़ोन इन्चार्ज हैं, उन्हों का एक दिन संगठन करेंगे, हिसाब-किताब तो पूछेंगे ना ! क्योंकि बापदादा के पास बहुत दु:ख और अशान्ति की आवाज़ आती हैं। परेशानी की आवाज़ आती हैं। आप लोगों के पास नहीं सुनने आते, आपके भी भक्त होंगे ना! तो भक्तों की पुकार आप इष्ट देवों को नहीं आती? टीचर्स को भक्तों की आवाज़ सुनाई देती है?

- अभी बहुत टाइम हो गया है कोई नये कार्य की इन्वेन्शन नहीं निकाली है। वर्गीकरण का कार्य भी अभी काफी टाइम चल चुका, कॉन्फ्रेन्सेज़ भी चल चुकी, युथ यात्रायें भी चल गई। अभी कोई नई सेवा की विधि निकालो। सोचो। जिससे आवाज़ सहज फैल जाये। अभी तक जो भी किया है, सेवा के प्लैन बापदादा को पसंद हैं और वृद्धि भी हुई हैं। लेकिन बहुत समय ये प्रोग्राम चल चुके अभी कोई नई इन्वेन्शन तैयार करो। कोई भी करे, छोटे करे तो इन एडवान्स मुबारक है।

- अभी सुनाया ना आज अभी एक समय पर एक सेवा नहीं करो, तीनों ही सेवायें इकट्ठी हों तो उसका प्रभाव जल्दी होगा। अपने चेहरे से, अपनी चलन से भी सेवा कर सकते हो। चलते फिरते म्यूज़ियम हो। अभी थोड़ा सा रियलाइज़ेशन सूक्ष्म चाहिए। रियलाइज़ करते हो लेकिन थोड़ा सा सूक्ष्म रुप से रियलाइज़ करके नंबरवन बन जाओ। विन करो और वन, सेकन्ड नंबर नहीं, वन।

- आज वतन में जो आपकी एडवान्स पार्टी वाले बच्चे हैं, उन्होंने भी एक एक ने यही कहा है कि हमारी तरफ से भी सभी को, चारों ओर के बच्चों को

यादप्यार देना और हमारा संदेश देना कि हम आपका इंतजार कर रहे हैं। आप जल्दी से जल्दी इंतजाम करो। विशेष आप सबकी प्यारी माँ, दीदी, भाउ विश्वकिशोर और जो भी साथी गये हैं उन्होंने, सभी ने आप सबको यादप्यार दिया है और साथ साथ मीठी माँ आपकी, उसने यही कहा है कि अब विजयी बन दु:ख दर्द दूर कर जल्दी जल्दी मुक्तिधाम का गेट खोलने के लिए बाप के साथी बन जाओ। 02-02-07

- बापदादा सभी बच्चों को समय की सूचना भी देते रहते हैं। यह वर्तमान संगम का समय सारे कल्प में श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ समय है क्योंकि यह संगम ही श्रेष्ठ कर्मों के बीज बोने का समय है। प्रत्यक्ष फल प्राप्त करने का समय है। इस संगम समय में एक एक सेकण्ड श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ है।

- कोई भी छोटे बड़े कोई स्थान नहीं रहे जो आपको उल्हना देवे कि हमारा बाप आया और हमें आपने सूचना नहीं दी, संदेश नहीं दिया। यह उल्हना नहीं रह जाये। जैसे अफ्रीका वालों ने अपनी एरिया को संदेश देने का कार्य सफल किया है। बापदादा को यह कार्य अच्छा लगता है। कोई का भी उल्हना नहीं रह जाना चाहिये। आपका काम है संदेश देना, वह अभी आवे या पीछे आवे लेकिन आपने अपना कार्य संपन्न किया। कोई भी एरिया खाली नहीं रहनी चाहिए। क्योंकि आप तो जानते हो ना - कि बाप का परिचय मिलने से, बाप के संबंध में आने से आत्मायें कितनी सुखी बन जायेंगी। अभी तो दिन-प्रतिदिन दु:ख और अशान्ति बढ़ती जा रही है क्योंकि दिन प्रतिदिन भ्रष्टाचार, पापाचार बढ़ रहा हैं। अति में जा रहा है। तो अपने भाई फिर भी बाप तो एक ही है ना, चाहे जाने चाहे माने, नहीं भी माने लेकिन बाप तो बाप ही है। तो अपने भाइयों को अपनी बहनों को संदेश जरुर दे दो। कोई गाँव भी नहीं रहना चाहिए।

- तो बापदादा कहते हैं चल रहे हो वा उड़ रहे हो? अभी चलने का समय नहीं है, उड़ने का समय है। उमंग उत्साह के, हिम्मत के पंख हर एक को लगे हुए हैं तो पंखो से उड़ना होता है। तो रोज़ चेक करो, उड़ती कला में उड़ रहे हैं? मन्सा शक्ति द्वारा आत्माओं की आत्मिक वृत्ति बनाओ। वायुमंडल बनाओ। अभी दु:ख

बढ़ता हुआ देख रहम नहीं आता है? आपके जड़ चित्र के आगे चिल्लाते रहते हैं, मर्सी दो, मर्सी दो, अब दयालु, कृपालु, रहमदिल बनो। अपने ऊपर भी रहम और आत्माओं के ऊपर भी रहम।

- यह सब अति में जाना है। देखो 10 साल पहले भ्रष्टाचार, पापाचार गुप्त था, आजकल खुले बाज़ार में हो गया है, अति में जाना है। कलियुग है ना ! कलियुग अति में जा रहा है। 15-02-07

- बाप को अकेला विश्व परिवर्तन का कार्य नहीं करना है, बच्चों के साथ साथ करना है। यह अलौकिक साथ रहने का प्यार, साथी बनने का प्यार यह संगम पर ही अनुभव करते हो। बाप और बच्चों का इतना गहरा प्यार है, जन्म भी साथ है और रहते भी कहाँ हो? अकेले या साथ में ? हर एक बच्चा उमंग उत्साह से कहते हैं हम बाप के साथ कम्बाइंड हैं। कम्बाइंड रहते हो ना ! अकेले तो नहीं रहते हो ना ! साथ जन्म है, साथ रहते हैं और आगे भी क्या वायदा है? साथ हैं, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे अपने स्वीट होम में।

- तो वायदा क्या है? साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, कम्बाइन्ड रहेंगे तो कम्बाइंड में समानता तो चाहिए ना। आज के दिन बापदादा की शुभ आशा है अपने आशाओं के दीपक बच्चों प्रति। तो बतायें? अपने को बांधना पड़ेगा, तभी कहो हाँ, ऐसे ही नहीं। क्योंकि 70 वर्ष देखो, 70 वर्ष तो बापदादा ने भी अलबेलेपन, आलस्य और बहाने बाजी, 70 Jर्ष खेल देख लिया। चलो 70 नहीं तो 50,40,30,20 लेकिन इतना समय तो यह तीन खेल खूब देखे बच्चों के। तो आज के दिन भक्त जागरण करते हैं, सोते नहीं हैं तो आप बच्चों का जागरण कौन सा है? कौन सी नींद में घड़ी-घड़ी सो जाते हो, अलबेलापन, आलस्य और बहानेबाजी की नींद में आराम से सो जाते हैं। तो आज बापदादा इन तीन बातों का हर समय जागरण देखना चाहते हैं।

- लेकिन है क्या, 70 Jर्ष तो हल्का छोड़ा लेकिन बापदादा देख रहे हैं कि समय का कोई भरोसा नहीं और इस ज्ञान के आधार पर हर पुरुषार्थ की बात में बहुतकाल का हिसाब है।

- तो बहुतकाल की प्राप्ति है। तो हर बात में बहुतकाल तो चाहिए ना।

- दूसरे को देखना सहज होता है, अपने को देखने में थोड़ी हिम्मत चाहिए। तो आज बापदादा हिसाब लेने आये हैं। लेकिन हिसाब का किताब खत्म कराने की गिफ्ट लेकर आये हैं। कमज़ोरी और बहानेबाजी का हिसाब-किताब बहुत बड़ा किताब है उसको खत्म करना है। तो हर एक जो समझते हैं हम करके दिखायेंगे, करना ही है, झुकना ही है, बदलना ही है, परिवर्तन सेरीमनी मनानी ही है वह हाथ उठाओ।

- बापदादा ने टोटल देखा है चाहे देश में, चाहे विदेश में हर पॉइन्ट के अनुभव में डीप में जाना यह थोड़ा अटेन्शन कम है। सुनने और सुनाने में अटेन्शन अच्छा है, उसमें नंबर वन हैं, लेकिन अनुभवी मूर्त बनना, चलते फिरते आत्मा का अनुभव होना, बाप के कम्बाईन्ड रुप का अनुभव होना, अनुभव में कमी है, इसलिए रियलाइज़ करो, तो रीयल गोल्ड बन जायेंगे। बाकी बापदादा खुश हैं, अटेन्शन भी टीचर्स देती हैं। आपकी दादी (जानकी दादी) बहुत अटेन्शन देती हैं। इतना ही अटेन्शन, जितना यह आपके ऊपर देती हैं और उम्मीदें रखती हैं, उतना हर एक अपने ऊपर जो बाप की उम्मीदें हैं, वह अटेशन रखें तो नंबरवन तो हुए ही पड़े हो।

- अभी जो बापदादा ने कहा वह हरेक, एक मिनट के लिए दृढ़ संकल्प स्वरुप में बैठो कि बहानेबाजी, आलस्य, अलबेलापन को हर समय दृढ़ संकल्प द्वारा समाप्त कर बहुतकाल का हिसाब जमा करना ही है। कुछ भी हो, कुछ नहीं देखना है लेकिन बाप के दिलतख्तनशीन बनना ही है, विश्व के तख्तनशीन बनना ही है। इस दृढ़ संकल्प स्वरुप में सभी बैठो।

- आपके दिल में तो है ही लेकिन अभी सर्व के दिलों में बाप का झंडा अर्थात् याद का झंडा लहराओ तो सारा विश्व फूलों का बगीचा बन जायेगा। काँटों का जंगल खत्म हो फूलों का बगीचा बन जायेगा। ऐसा संकल्प सदा दिल में इमर्ज करो, करना ही है, होना ही है, हुआ ही पड़ा है, सिर्फ निमित्त बनना है। 03-03-07

- अभी कोई नवीनता हो। कोई स्वयं ही निमित्त बने और प्लैन देवे कि यह यह कर सकते हैं। क्योंकि वर्गीकरण की सेवा को भी काफी समय हो चुका है। हर एक वर्ग से ऐसे कोई स्पीकर तैयार हों। आप टॉपिक देते हो उस पर भाषण देते हैं, नहीं। खुद उमंग आवे मुझे यह करना है। ऐसा कुछ प्लैन बनाओ। उसका आधार है, स्वयं निमित्त बनने वाले सेकण्ड में वेस्ट को खत्म कर बेस्ट का प्रभाव वायुमंडल में फैलायें। वेस्ट अभी भी है इसलिए मन्सा द्वारा सेवा का रेसपान्ड प्रेक्टिकल रुप में कम है। जैसे शुरु शुरु में स्थापना के समय में ब्रह्मा बाप का मन्सा वायब्रेशन कईयों को घर बैठे साक्षात्कार होने लगा, आवाज़ गया कोई आया हैं, जाओ। ऐसे बेस्ट थॉट्स का वायुमंडल नज़दीक ला सकता है। कोई भी विस्तार में नहीं जाओ, शॉर्ट। जो भी कारोबार की बातें करनी तो पड़ती है लेकिन जहाँ तक हो सके विस्तार से शॉर्ट करते मन्सा शक्तिशाली सेवा को बढ़ाओ। जैसे शिकारी जो होशियार होते हैं वह ऐसा तीर लगाते जो पंछी तीर सहित आके पांव में पड़ता। यह मन्सा सेवा ऐसी पावरफुल हो, जो आत्माओं को प्राप्ति की अनुभूति हो, रह नहीं सके। मन्सा शक्तिशाली से मन्सा सेवा की सिद्धि प्राप्त होनी है।

- अभी मन्सा स्वयं की पावरफुल होने से मन्सा सेवा की रिजल्ट सामने आयेगी।

- लेकिन समय फास्ट है, अभी भी समय बहुत फास्ट जा रहा है।

- क्योंकि ड्रामा में कोई कोई आत्मा को अचानक और एवररेडी का पाठ पक्का कराना है। देखो, जब चंद्रमणी दादी ने शरीर छोड़ा तो कुछ समय वह लहर अच्छी रही। सभी अचानक के पाठ में पक्के रहे, फिर धीरे धीरे हल्का हो गये। फिर यह जो ड्रामा में पार्ट हुआ यह वायुमंडल में अचानक और एवररेडी का पाठ फिर से पक्का कराने के निमित्त बने।

- यह भी समय सभी को अटेन्शन खिंचाने के लिए निमित्त बनता है। सभी थोड़ा थोड़ा अभी समझते हैं, अभी तो टाइम पड़ा है, यह लहर अभी होनी नहीं चाहिए। एवररेडी रहना चाहिए क्योंकि बहुतकाल का भी अटेन्शन रहना चाहिए।17-03-07

- लेकिन बाप को प्रत्यक्ष तब कर सकेंगे जब पहले अपने को बाप समान संपन्न, संपूर्ण प्रत्यक्ष करेंगे। तो बच्चे पूछते हैं बाप से कि कब प्रत्यक्ष होगा? और बाप पूछते हैं बच्चों से कि आप बताओ आप कब स्वयं को बाप समान प्रत्यक्ष करेंगे? अपने संपन्न बनने की डेट फिक्स की है? बापदादा पूछते हैं कि इसकी डेट कब फिक्स की है? क्या यह डेट ड्रामा फिक्स करेगा या आप फिक्स करेंगे? कौन करेगा? लक्ष्य तो आपको रखना ही पड़ेगा।

- पुरुषार्थ में एक बात की तीव्रता चाहिए। पुरुषार्थ है लेकिन तीव्र पुरुषार्थ चाहिए। तीव्रता की दृढ़ता उसकी एडीशन चाहिए। बापदादा की समय प्रमाण अभी हर बच्चों के प्रति चाहे नंबरवार हैं, बापदादा जानते हैं लेकिन नंबरवार में भी तीव्र पुरुषार्थ सदा रहे उसकी आवश्यकता है। समय संपन्न होने में तीव्रता से चल रहा है लेकिन अभी बच्चों को बाप समान बनना ही है, यह भी निश्चित ही है सिर्फ इसमें तीव्रता चाहिए। हर एक अपने को चेक करें कि मैं तीव्र पुरुषार्थी हूँ सदा? क्योंकि पुरुषार्थ में पेपर तो बहुत आते ही हैं और आने ही हैं लेकिन तीव्र पुरुषार्थी के लिए पेपर में पास होना इतना ही निश्चित है कि तीव्र पुरुषार्थी पेपर में पास हुआ ही पड़ा है। होना है, नहीं, हुआ ही पड़ा है। यह निश्चित है।

- बापदादा ने पहले भी कहा है कि वर्तमान समय के प्रमाण एक समय पर मन्सा,वाचा और कर्मणा अर्थात् चलन और चेहरे द्वारा तीनों ही प्रकार की सेवा, मन्सा द्वारा अनुभव कराना, वाणी द्वारा ज्ञान के खज़ाने का परिचय कराना और चलन और चेहरे द्वारा संपूर्ण योगी जीवन के प्रेक्टिकल रुप का अनुभव कराना, तीनों ही सेवा एक समय करनी है। अलग अलग नहीं, समय कम है और सेवा अभी भी बहुत करनी है।

- बापदादा ने देखा कि सबसे सहज सेवा का साधन है वृत्ति द्वारा वायब्रेशन बनाना और वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाना क्योंकि वृत्ति सबसे तेज साधन है। जैसे साइन्स की रॉकेट फास्ट जाती है वैसे आपकी रुहानी शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति, दृष्टि और सृष्टि को बदल देती है। एक स्थान पर बैठे भी वृत्ति द्वारा सेवा कर

सकते हैं। सुनी हुई बात फिर भी भूल सकती है लेकिन जो वायुमण्डल का अनुभव होता है, वह भूलता नहीं है।

- क्योंकि अभी समय प्रमाण तीव्र पुरुषार्थ है वृत्ति से वायुमण्डल बनाने का। तो वृत्ति में अगर ज़रा भी किचड़ा होगा तो वृत्ति से वायुमण्डल कैसे बनायेंगे? प्रकृति तक आपका वायब्रेशन जायेगा, वाणी तो नहीं जायेगी। वायब्रेशन जायेगा। और वायब्रेशन बनता है वृत्ति से, और वायब्रेशन से वायुमण्डल बनता है।

- इसलिए बापदादा अभी समय की समीपता अनुसार हर एक जो भी बाप के स्थान हैं, चाहे गांव में हैं, चाहे बडे ज़ोन में हैं, सेन्टर्स पर हैं लेकिन हर एक स्थान और साथियों में श्रेष्ठ वृत्ति का वायुमण्डल आवश्यक है।

- अभी विश्व को बहुत आवश्यकता है। आप निवारणमूर्त बन जाओ। आपके निवारणमूर्त बनने से आत्मायें निर्वाण में जा सकेंगी। अगर आप निवारणमूर्त नहीं बनेंगे तो आत्मायें बिचारी निर्वाण में जा नहीं सकेंगी। निर्वाण का गेट आपको ही खोलना है। बाप के साथ साथ गेट खोलेंगे ना? गेट की सेरीमनी करेंगे ना? अभी डेट बनाना आपस में।

- अगर अंत में तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तो बहुतकाल का जमा नहीं होगा। और बहुतकाल में अगर आपका जमा नहीं होगा तो 21 जन्म का बहुतकाल का अधिकार भी कम हो जायेगा। तो बापदादा नहीं चाहता है कि एक भी बच्चे का जब मेरा बाबा कहा, तो मेरा बाबा कहने वाले बच्चे, उनका अधिकार कम नहीं होना चाहिए।

- बहुतकाल ज़रुर इकट्ठा करना है फिर लास्ट में नहीं उल्हना देना कि हमें तो याद ही नहीं था बहुतकाल। 63 जन्म के बहुतकाल का प्रभाव अभी तक भी देख रहे हैं। चाहते नहीं हैं हो जाता है यह क्या है? बहुतकाल का प्रभाव है? इसलिए बापदादा हर एक प्यारे से प्यारे बच्चों को यही कहते हैं तीव्र पुरुषार्थी भव।

- तो क्या करेंगे? दादी सुनाओ क्या करेंगे? करके दिखायेंगे। करके ही दिखाना है। पहले अपने को प्रत्यक्ष करो तब बाप प्रत्यक्ष होगा। क्योंकि आप द्वारा

होना है ना ! तो बाप कहते हैं आप कब अपने को प्रत्यक्ष करेंगे? आपसे तो बाप प्रत्यक्ष हो ही जायेगा।

- बापदादा ने सुना कि मैजोरिटी सभी तरफ अभी एक-दो का उमंग लग रहा है कि हर एक अपने एरिया को चेक करके संदेश देने का प्रोग्राम बना रहे हैं। भिन्न-भिन्न विधि से कर रहे हैं लेकिन जो भी कर रहे हो वह अच्छा कर रहे हो। उल्हना उतार रहे हो अपना। यह उमंग उत्साह स्वयं को भी उड़ाता है, और औरों में खुशी की लहर फैलाता है। दु:खी आत्माओं को जैसे कोई डूबे हुऐ को पत्ते का भी सहारा मिल जाता है, तिनके का सहारा मिल जाता है ना, ऐसे दु:खी आत्माओं को सहारा मिल जाता है। उनके मन से जो दुआयें निकलती हैं वह आपके पुण्य के खाते में जमा हो जाती है। यह गुह्य हिसाब है। जितनों को जो प्राप्ति होती है, आपके खाते में वो प्राप्ति जमा हो जाती है।

- स्व की सेवा में क्या सुनाया? तीव्र पुरुषार्थी, पुरुषार्थी सभी हैं लेकिन तीव्र पुरुषार्थी बनना है, जो सोचा वह किया, बाप ने कहा बच्चों ने किया। यही आपके जगदम्बा की युक्ति थी, नंबरवन हो गई। चेक करो रात को, चलते फिरते भी जो बाप ने कहा करना है, चलना है, सोचना है वह किया? जो बाप ने कहा वो करना ही है।

31-03-07

- बापदादा ने पहले से ही इशारा दे दिया है कि बहुतकाल का अभी का अभ्यास बहुतकाल की प्राप्ति का आधार है। अंत में हो जायेगा नहीं सोचना, हो जायेगा नहीं, होना ही है। क्यों? स्वराज्य का जो अधिकार है वह अभी बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। अगर एक जन्म में अधिकारी नहीं बन सकते, अधीन बन जाते हो तो अनेक जन्म कैसे होंगे ! इसलिए बापदादा सभी चारों ओर के बच्चों को बार बार इशारा दे रहे हैं कि अभी समय की रफ्तार तीव्रगति में जा रही है इसलिए सभी बच्चों को अभी सिर्फ पुरुषार्थी नहीं बनना हैं लेकिन तीव्र पुरुषार्थी बन, पुरुषार्थ की प्रालब्ध का अभी बहुतकाल से अनुभव करना है। तीव्र पुरुषार्थ की निशानियाँ बापदादा ने पहले भी सुनाई हैं। तीव्र पुरुषार्थी सदा मास्टर दाता होगा, लेवता नहीं देवता, देने

वाला। यह हो तो मेरा पुरुषार्थ हो, यह करे तो मैं भी करूँ, यह बदले तो मैं भी बदलूँ, यह बदले, यह करे, यह दातापन की निशानी नहीं है। कोई करे न करे, लेकिन मैं बापदादा समान करूँ, ब्रह्मा बाप समान भी, साकार में भी देखा, बच्चे करे तो मैं करूँ , कभी नहीं कहा, मैं करके बच्चों से कराऊँ। दूसरी निशानी है तीव्र पुरुषार्थी की सदा निर्मान, कार्य करते भी निर्मान, निर्माण और निर्मान दोनों का बैलेन्स चाहिए।

- सेफ्टी का साधन है बापदादा की छत्रछाया में रहना, बापदादा से कम्बाइंड रहना। छत्रछाया है श्रीमत।

- बापदादा इशारा दे रहे हैं कि स्व प्रति हर एक को संकल्प, बोल, संपर्क, संबंध, कर्म में नवीनता लाने का प्लैन बनाना ही है। बापदादा पहले रिज़ल्ट देखेंगे क्या नवीनता लाया? क्या पुराना संस्कार दृढ़ संकल्प से परिवर्तन किया? यह रिज़ल्ट पहले देखेंगे। क्या सोचते हो? ऐसा करें? करें? हाथ उठाओ जो कहते हैं करेंगे, करेंगे? अच्छा करेंगे या दूसरों को देखेंगे? क्या करेंगे? दूसरों को नहीं देखना, बापदादा को देखना, अपनी बड़ी दादी को देखना।

- तो अगली सीजन में सभी की सूरत में बाप की सूरत दिखाई दे। हर एक के संबंध सम्पर्क में बाप जैसे संस्कार दिखाई दे। यह है स्नेह का रिटर्न, स्वयं को टर्न करना।

- आगे के लिए स्व परिवर्तन के लिए, अपने को देखना है, अपने को बदलना है, अगर झुकना पड़े तो झुकना है लेकिन परिवर्तन करने से स्व को हटाना नहीं है। ऐसे दृढ़ संकल्प कर हर एक को सबूत देना है क्योंकि सभी सपूत बच्चे हो। सपूत बच्चे का काम ही है प्रत्यक्ष सबूत देना।

- तो आप भी ऐसा आपस में प्लैन बनाओ, कोई एरिया रह नहीं जाये, कम से कम संदेश तो मिल जाये, नहीं तो आपको बहुत उल्हनें मिलेंगे। हमारा बाबा आया, और हमें सूचना नहीं दी। खुशी होती है, अपने मन में सेटिस्फेक्शन होता है हमने अपनी सेवा का कार्य संदेश देने का तो पूरा किया। क्योंकि बापदादा को भी कोई बच्चे का उल्हना अच्छा नहीं लगता।

- अभी पक्का। कुछ भी हो जाये, दूसरे को नहीं देखना, अपने को देखना, मुझे करना है, मुझे बदलना है। दूसरा बदले तो मैं बदलूँ नहीं। ऐसे करेंगे ?

- अपने को प्रत्यक्ष करेंगे तो बाप की प्रत्यक्षता भी बहुत सहज और जल्दी होगी। मीटिंग में जिसका भी नाम रखा है वह जिम्मेवार हैं, सिर्फ सुनने वा सुनाने के लिए नहीं लेकिन जिम्मेवार हैं बैलेन्स रखने और रखाने के।

- बस दिल से याद करो, कोई भी छोटी मोटी बात आवे, मेरा बाबा, बस। बाबा आप ले लो। तो प्रॉब्लम बाबा के पास पहुंच जायेंगी, आप हल्के हो जायेंगे। बाप के साथ चलना हैं ना, पीछे पीछे तो नहीं आना है, साथ साथ चलना है तो उड़ना पड़ेगा। बाप उड़ेंगे और बच्चे हल्के नहीं होंगे तो उड़ेंगे कैसे। साथ तो चल नहीं सकेंगे। इसलिए डबल लाइट! कोई भी प्रकार का बोझ नहीं। जो बोझ हो बाप को दे दो। खुद हल्के रहो। देना तो आता है ना। प्रॉब्लम नहीं देखो, डबल लाइट बनके आगे बढ़ते रहो – इसके -दादी जानकी के डायरेक्शन से चलो।

बापदादा के गंभीर इशारे - समय की समीपता

6-09-07 **से** 15-12-07 (**अव्यक्त बापदादा**)

6-09-07 (**दादी जी की पधरामणी -** 07.30 **बजे शाम को दादी गुल्जारजी के तन में**)

- दादी जी बोली... सदा एक दो को सम्मान देते हुए श्रेष्ठ स्वमान में रहते स्वयं को और विश्व की आत्माओं को मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा दिलाते रहना। सर्व से स्नेही बनने का रुप प्रत्यक्ष करना। दुनिया में भी प्यार चाहिए, सच्चा प्यार। तो प्यारे रहना और सर्व को आत्मिक प्यार की अंचली देते रहना, यही हमारी याद है। अच्छा। 06-09-07

- दादी की प्रत्यक्षता द्वारा ईश्वरीय विश्व विद्यालय और बापदादा की प्रत्यक्षता का फर्स्ट चैप्टर, छोटा सा चैप्टर आरंभ हुआ है। यह कौन है, यह

आध्यात्मिक विद्यालय क्या है, सबकी दृष्टि में, मन में, दिल में क्वेश्चन मार्क के रुप में उत्पन्न हुआ है। पहले क्या हैं, क्या हैं... यह क्वेश्चन होता, फिर यह हैं, यह हैं का उत्तर सामने आयेगा।

- अब आप सबको प्यार का स्वरुप प्रत्यक्ष रुप में दिखाकर इस प्रत्यक्षता के झंडे को ऊँचा लहराना है। दादी ने प्रत्यक्षता के झंडे का, प्रत्यक्षता के पर्दे का स्विच ऑन करने के लिए बटन हाथ में पकड़ा है, तो आप सब साथी हो ना। बहुत प्यार है ना दादी से, तो जैसे दादी स्व इच्छा से एवररेडी, नष्टोमोहा बन गई। अचानक के पार्ट में पास हो गई। यह अन्तिम पाठ का आप स्नेही, प्रेमी आत्माओं को भी इशारा देकर गई। अब आप अपने लिए सोचो, जो दादी ने प्रत्यक्षता का पर्दा खोलने का बटन हाथ में उठाया है, उस पार्ट में हमें कैसे सहयोगी बनना है। बटन खोलने में देरी नहीं लगेगी लेकिन प्रत्यक्षता के झंडे को ऊंचा लहराने वाले को प्रत्यक्षता का पर्दा खोलने के पहले विशेष पार्टधारी साथी एवररेडी हैं? अब यह नहीं समझो कि हम सेन्टर निवासी, मधुबन निवासी, हद के सेवाधारी हैं, नहीं, लेकिन विश्व की स्टेज के विशेष पार्टधारी हैं। सारे विश्व की नज़र अब दादी की प्रत्यक्षता के साथ आप सबके तरफ है। विश्व की नज़र जो भी ब्रह्माकुमार-कुमारी कहलाते हैं, छोटा है, बड़ा है, किसी भी कार्य के अर्थ निमित्त हैं, चाहे छोटे कार्य के भी निमित्त हैं लेकिन एक-एक के ऊपर, विश्व के आत्माओं की नज़र है।

- दादी कहती हैं कल की बातें छोड़ो, आज भी नहीं, अब... प्रत्यक्षता का झंडा ऊँचा करने वाले ऊँची स्थिति का अपना संम्पन्न स्वरुप दिखाओ। उसके लिए कुछ भी परिवर्तन करना पड़े, सहन करना पड़े, रहम की भावना रखनी पड़े, निर्मल वाणी बनानी पड़े, शुभ भावना, शुभ कामना की नेचुरल नेचर बनानी पड़े, तो दादी ने कहा, आप पूछना मेरी इस बात को, मेरे समान बनने के लिए तैयार हैं? दादी ने इतनों को चला के दिखाया, कितने वर्ष, एक दो वर्ष नहीं, चाहे बड़े चाहे छोटे, चाहे कर्मणा वाले, चाहे भाषण वाले, चाहे ज़ोन वाले, चाहे दादियाँ, दादाओं को भी। निर्मोही बन गई ना, लास्ट में किसी को याद किया?

- किसके मन की स्थिति भी रीयल क्या है, वह भी सभी का चक्कर लगाके नोट किया है। कहती थी कि मैं आकर सुनाऊँगी। कितना भी कोई छिपावे ना, वतन में छिप नहीं सकता। वहाँ का यंत्र रुहानी यंत्र है।

- वह दिन अब समीप लाना है, समय आने पर नहीं, समय को आपको समीप लाना है। तो ऐसे स्व परिवर्तक, दृढ़ संकल्पधारी बच्चा बनना है।

- तीन शब्द दादी के सदा याद करना- निमित्त, निर्मान और निर्मल वाणी। हर कार्य शुरु करने के पहले यह याद करना फिर कार्य शुरु करना तो बहुत जल्दी दादी के समान, सहज समान बन जायेंगे।

- अब यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय छिपा हुआ नहीं रहेगा, एक-एक एक्टिविटी तरफ खुल्ली नज़र हो गई है, उल्टे वाले उल्टा देखेंगे, सुल्टे वाले सुल्टा देखेंगे, लेकिन विशेष नज़र पड़ गई तो उसी अनुसार आप सबको मिलकर सभी स्थानों के वायुमण्डल को पावरफुल बनाना होगा, क्योंकि दादी ने विश्व की नज़र में लाया है। एक -पहले जो प्रेज़ीडेन्ट बननी थी उसके कारण सबकी नज़र में आया और फिर दादी के कारण ज्यादा नज़र में आया तो सबकी नज़र अभी विशेष इस विद्यालय की तरफ है। इसलिए अन्डरलाइन।

- ऐसे आप निमित्त हो, तो निमित्त को दादी को फॉलो करना बहुत ज़रूरी हैं। शक्ति तो सभी में नहीं है ना, नंबरवार है ना, सहयोग दो, शक्ति दो, रहम करो, आत्मिक प्यार दो क्योंकि सबकी नज़र अभी देश-विदेश की निमित्त आत्माओं पर है क्योंकि यह मीडिया ने चारों ओर स्पष्ट कर लिया है, अभी सबकी नज़र है। क्या हो रहा है, क्या हो रहा है, और ही ज्यादा सोचेंगे। क्या हैं, कैसा है, इसलिए किले को मज़बूत करना। सभी को समझना चाहिए मैं निमित्त हूँ, वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाने के लिए मैं निमित्त हूँ, दूसरे नहीं, दूसरे तो नंबरवार हैं आप तो निमित हो।

- तो दादी ने कहा मैं बाबा के राज़ को समझ गई हूँ इसलिए मैं खुशी से जा रही हूँ। 15-10-07

“6 मास अभी स्व सेवा के प्रति खास समय दे रहे हैं ”

- तो बाप ने भी अपना बना लिया। इसी खुशी में पलते हुए उड़ रहे हो ना! उड़ रहे हो, चल नहीं रहे हो, उड़ रहे हो क्योंकि चलने वाले बाप के साथ अपने घर में जा नहीं सकेंगे। क्योंकि बाप तो उड़ने वाले हैं, तो चलने वाले कैसे साथ पहुंचेंगे।

- बापदादा अभी समय की समीपता प्रमाण हर एक बच्चे में क्या देखने चाहते हैं ? जो कहते हैं वह करके दिखाना है। जो सोचते हो वह स्वरुप में लाना है क्योंकि बाप का वर्सा है, जन्म सिद्ध अधिकार है मुक्ति और जीवनमुक्ति। तो अब संगम पर ही मुक्ति और जीवनमुक्ति के संस्कार इमर्ज चाहिए ना ! तो चेक करो सर्व बंधनों से मन और बुद्धि मुक्त हुए हैं ? अगर किसी भी प्रकार का चाहे देह का, चाहे कोई देह के संबंध, माता-पिता बंधु सखा नहीं, देह के साथ जो कर्मेन्द्रियों का संबंध है, उस कोई भी कर्मेन्द्रियों के संबंध का बंधन है, आदत का बंधन है, स्वभाव का बंधन है, पुराने संस्कार का बंधन है, तो बाप समान कैसे हुए ?

- अभी ६ मास बापदादा देखते हैं क्योंकि अभी सीज़न तो शुरु होनी ही है, तो ६ मास ज्यादा टाइम दे रहे हैं। जैसे सेवा उमंग उत्साह से कर रहे हैं, ऐसे स्वयं को भी स्व के प्रति सेवा, स्व सेवा और विश्व सेवा, स्व सेवा अर्थात् चेक करना और अपने को बाप समान बनाना। तो ६ मास अभी स्व सेवा के प्रति खास समय दे रहे हैं। बापदादा ने कितने समय से दो शब्द बार-बार रिवाइज़ करायें हैं, वह दो शब्द कौन से हैं ? **अचानक और एवररेडी**।

- तो दादी कहते हो, याद आती है ना, आनी ही चाहिए क्योंकि नंबर वन थी ना। तो वन नंबर ने विन तो किया ना लेकिन जब भी दादी की याद आवे तो सिर्फ चित्र नहीं देखना लेकिन यह याद करो कि मैं भी एवररेडी हूँ। मुझे भी अचानक का पाठ याद है? अभी अभी मैं भी अचानक चली जाऊँ, तो नष्टोमोहा, प्रकृतिजीत हूँ? यही दादी की सौगात सब अपने पास रखो।

- अच्छा है, यह परमात्म प्यार बहुत पुरुषार्थ में सहयोग देता है। तो हर एक बच्चा प्यारा है, प्यारे रहेंगे और प्यार के झूले में झूलते हुए बापदादा के साथ अपने

घर चलेंगे। वह भी टाइम आ जायेगा जो सब साथ चलेंगे, साथ चलने वाले हो ना। पीछे पीछे नहीं आना, मज़ा नही आयेगा। मज़ा हैं हाथ में हाथ, साथ में साथ, हाथ है श्रीमत, श्रीमत बुद्धि में होगी, आत्मा परमात्मा का साथ होगा और घर चलेंगे। चलने वाले हो ना सभी, रह नहीं जाना। अभी भी साथ हैं, चाहे किसी भी कोने में हो लेकिन बाप साथ हैं, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे और फिर ब्रह्मा बाप के साथ राज्य करेंगे। पक्का वायदा है ना। बीच में नहीं रह जाना। कोई कस्टम की चीज़ होंगी तो रुक जायेंगी। रावण की चीज़ हुई ना कस्टम। कोई भी रावण का संस्कार, स्वभाव वह धर्मराज पुरी कस्टम में फंसा देंगी। और बाप के साथ चले जायेंगे, और कोई अगर होंगा तो कस्टम में रुकना पड़ेगा, अच्छा लगेगा, नहीं लगेगा ना ? बाप को भी अच्छा नहीं लगेगा। जब वायदा है साथ का, तो सदा साथ रहना।

- दादी जानकी से : बैठो। अभी तो सीट पर सेट हो ना। बापदादा ने निमित्त बनाया है। इस बच्ची को (गुल्जारदादी को) भी निमित्त बनाया है, दोनों तीनों मिलकर बहुत अच्छी रीति से स्व पुरुषार्थ और विश्व सेवा में और विधि से सिद्धि प्राप्त कराने के निमित्त बनेंगी।

- जो दादी का संकल्प रहा है, बाप को प्रत्यक्ष करने का, दादी ने भी बटन तो हाथ में लिया है, लेकिन दबायेंगे तो आप ना। आप ही दबायेंगे ना।

31-10-07 **(टीचर का रुप)**

- अभी बापदादा ने होमवर्क दिया था, याद है होमवर्क ? याद है? तो यह दुआ देना, दुआ देना अर्थात् दुआ लेना अन्डरस्टुड हो जाता है। तो जिन्होंने भी किया है उन सबको, चाहे आये हैं, चाहे नहीं आये हैं लेकिन बापदादा के सामने हैं। तो उन्हों को बापदादा मुबारक दे रहे हैं। किया है और अपनी नेचुरल नेचर बनाते हुए आगे भी करते, कराते रहना। और जिन्होंने थोड़ा बहुत किया भी है, नहीं भी किया है तो वह सभी अपने को सदा मैं पूज्य आत्मा हूँ, मैं बाप की श्रीमत पर चलने वाली विशेष आत्मा हूँ, इस स्मृति को बार बार अपनी स्मृति और स्वरुप में लाना। बापदादा खुश हैं कि जिन्होंने भी किया है, उन्होंने अपने मस्तक में विजय का तिलक बाप द्वारा लगा

दिया। अभी समय की समीपता प्रमाण वरदानों को हर समय अनुभव में लाओ। अनुभव की अथॉरिटी बनो।

- अच्छा है यह सभी बहुत अच्छे फॉरेन सेवा के लिए माईक और बच्चे दोनों पार्ट बजायेंगे। बच्चों का भी पार्ट बजायेंगे और माईक और लाइट बनके सेवा में और वृद्धि को प्राप्त करायेंगे। इस ईश्वरीय नॉलेज की प्रोपगेन्डा अब विदेश में भी निमित्त बनके कर रहे हो। अभी वहाँ भी आवाज़ फैल रहा है, अच्छी तरह से फैल रहा है और ड्रामानुसार आप सबकी और बाप की प्यारी दादी के निमित्त भी चारों ओर ब्राह्मण परिवार का, बाप का नाम अच्छा प्रत्यक्ष हो गया है। दादी ने नाम प्रत्यक्ष किया, नाम और काम दो चीज़ होती हैं तो दादी ने नाम बहुत अच्छा फैलाया, अभी उन आत्माओं को अपना बनाना यह काम आपका है।

- पहले तो कोई मुश्किल से आता था और अभी खुद कहते हैं हम भी आना चाहते हैं। फर्क हो गया ना। अभी खुद ही कहते हैं कि आपके यहाँ कार्य बहुत अच्छा सफल होता है। तो अभी आँख खुलने शुरु हो गई हैं। धीरे धीरे आँख खुल जायेंगी।

- सभी निश्चयबुद्धि और ईश्वरीय नशे में रहने वाले, उड़ने वाले हैं। चलने वाले नहीं बनना, उड़ने वाले। चलने वाले समय पर नहीं पहुँच सकेंगे, उड़ने वाले बनना। डबल लाइट।

- अभी एक बात चाहिए, सुनायें क्या ? एक बात जैसे सेवा में, कार्य में हर डिपार्टमेन्ट, हर वर्ग, हर सेन्टर, हर ज़ोन सेवा बढ़ा रहा है। लेकिन अभी आवश्यकता है - एकता और इकॉनोमी की। यह दो चीज़ें सम्मान देना और सम्मान लेना। तो दो अक्षर याद रखना एकता और इकॉनोमी ।

- अभी ब्राह्मणों का आपस में मिलना यह होना चाहिए। तभी आपका वायुमण्डल विश्व में स्नेह, सहयोग, हिम्मत फैलायेगा। सभी ब्राह्मण जो अपने को ब्रह्माकुमार कुमारी समझते हैं, उनको ऐसे ही सेवा में बिजी रहना है। 30-11-07

- बापदादा कहते हैं कि भले लेट तो आये हो लेकिन टू लेट में नहीं आये हो। और नये बच्चों को बापदादा का वरदान है कि लास्ट वाला भी फास्ट पुरुषार्थ कर फर्स्ट डिवीज़न में आ सकते हैं।

- अभी समस्या का नाम, विघ्न का नाम, हलचल का नाम, व्यर्थ संकल्प का नाम, व्यर्थ कर्म का नाम, व्यर्थ संबंध का नाम, व्यर्थ स्मृति का नाम समाप्त करो और कराओ।

- जब सभी का मिलकर मन से दृढ़ संकल्प का हाथ उठेगा तब ही विश्व के कोने-कोने में सभी का खुशी से हाथ उठेगा - हमारा सुखदाता, शान्तिदाता बाप आ गया।

- बाप को प्रत्यक्ष करने का बीड़ा उठाया है ना! अच्छा डेट फिक्स की है? कितना टाइम चाहिए? बापदादा ने कहा था हर एक अपने पुरुषार्थ की यथा शक्ति प्रमाण अपनी नेचुरल चलने की या उड़ने की विधि समान अपनी डेट संम्पन्न बनने की खुद ही फिक्स करो। बापदादा तो कहेंगे, अब करो, लेकिन यथाशक्ति अपने पुरुषार्थ अनुसार अपनी डेट फिक्स करो और समय प्रति समय उसको चेक करो कि समय प्रमाण मन्सा की स्टेज, वाचा की स्टेज, संबंध सम्पर्क की स्टेज में प्रोग्रेस हो रहा है? क्योंकि डेट फिक्स करने से स्वत: ही अटेन्शन जाता है।

- तो विशेष आत्माओं की पहली निशानी है तीव्र पुरुषार्थी। सोचा और किया। ऐसे नहीं कहेंगे, हो जायेगा... होना तो है ही... नहीं। करना ही है। उड़ना ही है। बाप समान बनना ही है, इसको कहते हैं तीव्र पुरुषार्थी। अभी समय तीव्र समीप आ रहा है। समय में तीव्रता आ गयी है लेकिन दु:ख के अशान्ति के समय को समाप्त करने वाले, उन्हों को तो समय से भी तीव्र बनना ही है।

- आखिर तो सभी वर्ग वाले मिल करके कहें हम सब एक बाप के एक हैं। इस विश्व की स्टेज पर एक हैं, एक मत हैं, एक के ही हैं यह आवाज़ फैले।

- गरीबी बढ़ती जाती है और गरीबी के समय अगर सहज साधन मिल जाए तो सभी खुश होते हैं।

- जो भी आप निमित्त है, उन्हों को विशेष इस समय यह अटेन्शन रखना है कि संतुष्ट रहना तो है ही लेकिन संतुष्ट रहे, वायुमण्डल संतुष्ट रहे उसके लिए आपस में कोई न कोई प्लैन बनाते रहना।

- असंतुष्टता का वायुमण्डल में प्रभाव नहीं हो क्योंकि आजकल संतुष्टता सबको चाहिए। लेकिन हिम्मत नहीं है। इसलिए बीच बीच में कुछ न कुछ ऐसा परवश होके कर लेते हैं लेकिन उन्हों को भी कुछ शिक्षा, कुछ क्षमा, कुछ रहम, कुछ आत्मिक स्नेह उसकी आवश्यकता है।

- बाकी विशेषता सबमें है। छोटे से छोटा जो प्यादे में प्यादा है ना उसमें भी विशेषता है। इसलिए संगठन सभी जगह मज़बूत करो, चाहे २ हैं, चाहे ४ हैं, चाहे १ २ हैं, लेकिन दो का भी संगठन ऐसा मज़बूत हो जो दोनों एकमत हो। स्वभाव एक दो में श्रेष्ठ बनाएं, मिलाने की कोशिश करो। जैसे दादी को याद करते हैं ना, क्यों याद करते हो? उनकी विशेषता सबको अपनापन दिया। अपनापन महसूस हो, ऐसे नहीं यह तो पता नहीं कौन है, क्या है। एक परिवार है ना! तो आप सभी भी अपने अपने स्थान पर रहते भी अपनापन दे सकते हो। 15-12-07

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि समय की रफ्तार बहुत-बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। पुरुषार्थ तो सब कर रहे हैं लेकिन बापदादा क्या देखने चाहते हैं? हर बच्चा तीव्र पुरुषार्थी। तीव्र पुरुषार्थी के लक्षण विशेष दो है - एक नष्टोमोहा, दूसरा एवररेडी। सबसे पहले नष्टोमोहा, इस देहभान, देह अभिमान से। और एवररेडी, एवररेडी का अर्थ है - मन-वचन-कर्म, संबंध सम्पर्क में समय का ऑर्डर हो अचानक तो एवररेडी, और अचानक ही होना है। जैसे अपनी दादी को देखा अचानक - एवररेडी। इसलिए बापदादा समय की समीपता का बार बार इशारा दे रहा है। स्व पुरुषार्थ का समय बहुत थोड़ा है, इसलिए अपने जमा के खाते को चेक करो। तीन विधियाँ खज़ानों को जमा करने की पहले भी बताई हैं, फिर से सुना रहे हैं। उन तीनों

विधियों को स्वयं चेक करो। एक है स्वयं के पुरुषार्थ से प्रारब्ध का खज़ाना जमा करना। प्राप्तियों का खज़ाना जमा करना। दूसरा है - संतुष्ट रहना, इसमें भी सदा शब्द एड करो और सर्व को संतुष्ट करना, इससे पुण्य का खाता जमा होता है। और यह पुण्य का खाता अनेक जन्मों के प्रारब्ध का आधार रहता है। तीसरा है सदा सेवा में अथक, नि:स्वार्थ और बड़ी दिल से सेवा करना, इससे जिसकी सेवा करते हैं उनसे स्वत: ही दुआयें मिलती हैं। यह तीन विधियाँ है, स्वयं का पुरुषार्थ, पुण्य और दुआ। यह तीनों खाते जमा है? तो चेक करो क्योंकि अचानक कोई भी पेपर आ जाए, क्योंकि आजकल के समय अनुसार प्रकृत्ति के हलचल की छोटी छोटी बातें कभी भी आ सकती है। इसलिए कर्मों के गति का नॉलेज विशेष अटेन्शन में रहे।

- साथ साथ अभी समय के प्रमाण विश्व की आत्मायें जो दु:खी, अशान्त हो रही है उन आत्माओं को दु:ख, अशान्ति से छुड़ाने के लिए अपनी शक्तियों द्वारा सकाश दो। तो अभी मनसा सेवा करो।

- एवररेडी हो ना? कल भी कुछ हो जाए, एवररेडी हैं? कल भी हो जाए तो? जितने भी वर्ग आये हो, एवररेडी। क्योंकि समय आपका इंतज़ार कर रहा है। बापदादा मुक्ति का गेट खोलने का इंतज़ार कर रहा है। एडवान्स पार्टी आह्वान कर रही है। क्या नहीं कर सकते हो? मास्टर सर्व शक्तिवान तो हो ही। दृढ़ संकल्प करो यह करना है, यह नहीं करना है, बस।

- बच्चे हाज़िर है, तो बाप तो हाज़िर है ही। न बाप बच्चों से दूर हो सकता, न बच्चे बाप से दूर हो सकते। वायदा है साथ हैं, साथ चलेंगे, आधा कल्प ब्रह्मा बाप के साथ रहेंगे।

□□□□□□□□

अव्यक्त बापदादा - वतन के दिव्य संदेश

अब तो बच्चों को तीव्रगति से सर्व आत्माओं के बढ़ते हुए दु:ख अशान्ति का निवारण कर बाप द्वारा मुक्ति का वर्सा दिलाना है। इसलिए अब इस संगमयुग के हर संकल्प, हर घड़ी को स्व और सर्व के कल्याण में लगाना है। व्यर्थ नहीं जाए क्योंकि इस समय की हर घड़ी सारे कल्प की प्रालब्ध बनाने वाली है। 11-04-07

समय तो अति की चैलेन्ज कर ही रहा है। इसलिए अब प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाओ जो साइन्स की शक्ति नहीं कर सकती, वह साइलेन्स की शक्ति द्वारा प्रत्यक्ष कर दिखाओ। 06-05-07

21-06-07 **(मम्मा स्मृति दिन निमित्त)**

मम्मा ने कहा आप सबकी स्थिति... तो हमने कहा सभी तैयार हो रहे हैं। तो बाबा ने कहा कि बाबा ने बच्चों को इशारा दिया है कि जो कुछ होगा, अचानक होगा और उसकी शुरुआत जो होगी वो भी नेचुरल केलेमिटीज़ से होंगी और नेचुरल केलेमिटीज़ की उथल-पुथल अंदर ही अंदर शुरु हो गई है। उसके लिए कोई टाईम नहीं है, कोई मीटर नहीं है, कोई बटन नहीं है जो बाबा दबायें और ऐसा हो, ये प्रकृति का जो कुछ भी होगा सब अचानक होगा।

तो हमने पूछा मम्मा हमारे संगठन के पुरुषार्थ में तेजी कब आयेगी ? तो मम्मा ने कहा कि अभी आप लोगों का अटेन्शन कम है। बहुतो के अंदर चलता है कि समय आयेगा तो हम तैयार हो जायेंगे। आप समय का इंतजार करते हो, बार-बार पूछते हो अभी कितना समय है, कितना समय है, लेकिन बाबा ने कई बार इशारा दिया है कि आप घडियाँ हो, आप समय को नज़दीक लाने वाले हो। तो आपका भी सब तरफ जब एक ही आवाज आयेगा कि परिवर्तन करना है, परिवर्तन करना है, घर जाना है, घर जाना है तब आप देखेंगे चारों तरफ का आवाज़, सबका एक संकल्प सब की अवस्था में कितना जल्दी परिवर्तन लाता है।

अभी चारों तरफ से बच्चों के अंदर उपराम, घर चलने की भावना जब एकदम पक्की हो जायेगी तब ये कार्य शुरु हो जायेगा। इसलिए बच्चों को कहना कि आज के दिन मम्मा की सौगात है कि उपराम बनो, घर चलने की तैयारी करो। जितना उपराम बनते जायेंगे उतना घर नज़दीक आता जायेगा।

27-08-07 (दादीजी के अव्यक्त होने के बाद)

- बाबा ने कहा अभी बच्ची समय को समीप लाना है। बहुत दु:ख, भ्रष्टाचार अति में जा रहा है, और बच्चे जो हैं वह अभी भी छोटी छोटी बातों में जैसे कोई गुड़ियों का खेल करे ना, ऐसे छोटी-छोटी बातों में समय लगा रहे हैं।

- बाबा अभी बार-बार सभी बच्चों को कहते हैं, अचानक और एवररेडी। दादी की दोनों बातों में विशेषता देखी, एक एग्ज़ाम्पल दादी का देखा, कुछ याद आया ? कोई बात याद आई ? अपने शरीर से भी न्यारी हो गई। और साथ साथ अचानक ही दादी चली गई।

- जैसे ब्रह्मा बाबा कहते हैं प्यार की निशानी बाप समान बनो। ऐसे आप सभी कहते हो दादी से बहुत प्यार है, तो दादी भी दो शब्द बोलने चाहती हैं। दादी ने कहा कि जैसे मैंने बाबा को फॉलो करते स्वमान में रहकर के छोटे-बड़े को सम्मान दिया, दुआयें ली, आज दुआओं का इनाम बाबा मुझे दे रहे हैं। तो आप सभी भी यह दो शब्द स्वप्न में भी नहीं भूलना कि स्वमान में रहना है और हर छोटे-बड़े को सम्मान देके खुद भी परिवर्तन होना है और औरों को भी परिवर्तन करना है।

- यह मेरी तरफ से सभी मेरी सख़ियों को, मेरे भाईयों को संदेश देना कि अभी बहुत टाइम बीत गया, अभी घर चलना है, तो दीदी ने बीच में ही कहा, यह तो मेरी बात आपने कह दी, मुझे तो घर बहुत याद आता था मेरा तो गीत ही यही था कि अब घर जाना है। तो जो भी एडवान्स पार्टी वाले थे, उन सबने भी कहा कि हम सब भी आपको कहते हैं, हम सब आपका इंतजार कर रहे हैं, मुक्तिधाम का गेट भी आप

सबका इंतजार कर रहा है इसलिए दुआयें लो और यही सहज पुरुषार्थ करके अभी जल्दी-जल्दी वतन में आ जाओ। 28-08-07

- यज्ञ की पालना और उसका विस्तार और दूसरी तरफ राजधानी की स्थापना में दादी का विशेष पार्ट है। जैसे इतने वर्ष यज्ञ की पालना के निमित्त बनी, ऐसे राजधानी की जो स्थापना हो रही है, उसका प्लैन दादी को बाबा के साथ करना है। तो दादी ने कहा कि बाबा के जो भी अनन्य बच्चे हैं सबके पार्ट में परिर्वतन तो आना ही है। जैसे दादी हमेशा कहती थी "बाबा यह करवा रहा है, बाबा ने यह किया" 29-08-07

- जो भी मेरे संकल्प बाकी रहे हैं वह बाबा पूरा करने के प्लैन बना रहा है। बाबा ने कहा इन दिनों में बहुत कुछ होने वाला है। बड़े बड़े साइन्टिस्ट, विद्वान, बड़े बड़े लोगों के पास दादी को सब तरफ जाना है। तो दादी ने बाबा को बिज़ी कर दिया है। दादी को बहुत फास्ट सब कुछ करना है तो वह प्लान बन रहा है। यह विशेष समय चल रहा है जिसमें बहुत कुछ होगा। उसके बाद आप बच्चों को थोड़ी मेहनत से बहुत सफलता का अनुभव होगा। 30-08-07

- बाबा मुस्कराये और कहा कि देखो मम्मा ने यज्ञ स्थापना में अपना सब प्रकार का सहयोग दिया, जिससे यज्ञ कहाँ से कहाँ तक पहुँच गया, और इस बच्ची ने फिर (1) विश्व सेवा में सम्पूर्ण सहयोग देकर सारे विश्व में शान्ति का सन्देश फैलाया। तो यह बच्ची सेवा के निमित्त बनी, (2) जो बाबा ने कहा, जैसा बाबा ने कहा, जब कहा बच्ची ने हाँ जी का पाठ पक्का किया और (3) शुरु से लेकर लक्ष्य रखा कि मुझे बाप समान बनना है। यह बच्ची का अन्दर ही अन्दर पुरुषार्थ चलता रहा। (4) बच्ची ने अपनी सत्यता, पवित्रता, प्यार, शांति और रहम की दृष्टि से सारे ब्राह्मण परिवार को एक सूत्र में बाँधकर रखा। हर एक के दिल में यही रहा कि जो दादी कहें। (5) तो इतना बड़ा कार्य बाबा ने इस बच्ची से कराया और बच्ची ने किया। (6) निश्चय के आधार पर बच्ची ने हर कार्य में, हर सेवा में, हर श्वांस में, हर संकल्प में विजय प्राप्त की और (7) बाप से अति प्यार होने के कारण बच्ची ने त्याग

भी बहुत किया (8) कुर्बानी भी बहुत की (9) न अपने शरीर पर (10) न किसी पदार्थ पर (11) न किसी वैभवों पर... कहाँ भी बच्ची की दृष्टि नहीं जाती थी।

- हमने कहा बाबा अभी दादी जानकी को मुख्य बनाया गया है। तो बाबा ने कहा देखो त्रिमूर्ति का गायन है, त्रिमूर्ति को पहले से ही आप दिखाते थे, दादी जानकी, दादी गुलज़ार और दादी तीनों ही सदा साथ।

- फिर बाबा ने कहा जानकी बच्ची को तो अभी डबल सेवा करनी पड़ेगी। अभी तो डबल ताज हो गया।

- तो समय को समीप लाने के लिए बाबा ने बच्ची को (दादीजी को) अपना साथी बनाया हुआ है। तो चारों तरफ चक्कर लगाकर बच्ची कार्य को सम्पन्न करेगी। अभी तो एक तरफ प्रकृति की हलचल, दूसरे तरफ माया के भिन्न स्थूल सूक्ष्म रुप, तीसरे तरफ राजनीति की हलचल, साइन्टिस्ट की हलचल यह सब हलचल अभी शुरु होगी क्योंकि अभी डबल पावर काम करेंगी इसलिए बाबा बच्चों को भी इशारा देता है कि बच्चे भी सम्पूर्ण शक्ति से, एकाग्र बुद्धि से समय को समीप लाने वाले बने। जो बाबा चाहता है कि बच्चे सम्पन्न बनें, सम्पूर्णता की ओर चलें, तो जो कार्य मुश्किल लगता था, अभी वह कार्य सहज होता जायेगा लेकिन बच्चों को थोड़ा एलर्ट रहना होगा फिर स्थापना का कार्य देखना कितनी ज़ोर पकड़ता है। तो अभी दुनिया में भी हलचल बढ़ती जायेगी और आप लोगों को भी अचल अडोल स्थिति में एकनामी होकर चलना होगा। 31-08-07

- बाबा ने कहा जो भी विश्व परिवर्तन के कार्य में लगे हैं उनको गाइडेन्स की, फोर्स भरने की जरूरत है, दादी उनमें विशेष फोर्स भर रही थी, गाइड कर रही थी, जिससे उनको लगता था कि अभी मुझे बहुत कुछ कार्य करना है। दूसरी ओर विश्व परिवर्तन के जो निमित्त हैं उनको दादी टच कर रही थी। तीसरा - दादी ने विश्व का भ्रमण किया तो जो आत्मायें खाली-खाली अनुभव करती हैं, उनके सामने दादी जाती और रहमदिल बनकर उन्हें कुछ न कुछ शक्ति, उमंग दे रही थी।

- मेरे सेवा के सभी साथी अपने को ऐसी ही स्पीड में लाकर हद की बातों से ऊपर उठे और यह कार्य तीव्र गति से करें। 01-09-07

- इसी प्रकार यह शांतिवन दादीजी की तपस्या और प्रकाश का स्थान बन जायेगा। दादी का कमरा, बाबा का कमरा, कॉटेज का यह स्थान भी प्रकाशमय और शक्तिशाली बन जायेगा। जिससे ब्राहाण परिवार और आने वाली आत्माओं को प्रकाशमय और शक्तिशाली वायुमण्डल का खिंचाव होगा। 02-09-07

- जैसे-जैसे कर्मातीत अवस्था के नज़दीक आती गई यह सब संबंध खत्म होते गये, बस आप और बाप, यही स्मृति दादी की अंत तक रही। और दादी का मुरली से भी प्यार, सेवा से भी प्यार और बाप से भी प्यार था।

- जो दादी ने करके सिखाया, दिखाया, उस कदम के पिछाड़ी कदम रखते अपने आपको भी सम्पन्न, कर्मातीत बनाओ और जो बाबा और दादी का कार्य रहा हुआ है उसको भी जल्दी-जल्दी सम्पन्न करो क्योंकि अभी तो स्थापना के लिए नया फोर्स, डबल फोर्स हो गया है ना, वह कार्य करेगा। इसलिए बच्चों को कहना कि अभी अलर्ट रहकर ऑलराउन्ड सेवा में रहते अपना भी, अन्य आत्माओं का भी भाग्य बनाओ। 03-09-07

- दादी ने बोला कि अभी तो मैं पूरे विश्व की आत्माओं के पास जाकर के स्नेह शक्ति दे रही हूँ और जो बाबा ने हमें इतना कार्य दिया है, वो अभी बहुत जल्दी-जल्दी पूरा करना है।

- बहुत अच्छी तरह से बाबा सभी स्थानों पर सेवा करा रहा है। एडवान्स पार्टी वाले भी सभी दादी को मिल रहे हैं और अपनी-अपनी सेवायें बता रहे हैं। और भी प्रोग्राम बता रहे हैं कि कैसे-कैसे अभी सेवायें करनी है। तो बस, वतन में वही सब कुछ चल रहा है। 04-09-07

- बाबा ने कहा देखो बच्ची को साकार में तो कई लोग जानते थे, कई नहीं जानते थे, ब्रह्माकुमारियों को भी नहीं जानते थे, दादी क्या है यह भी नहीं जानते थे।

पर दादी जब गई तो टी.वी. द्वारा, साइंस के साधनों द्वारा कितनी आत्माओं की सेवा हुई, अज्ञानी आत्माओं ने भी दादी को देखा। वैसे शिवबाबा को तो कोई देख नहीं सकता लेकिन दादी का रुप देख करके भी लोगों को यही लगता है कि वास्तव में ब्रह्माकुमारी संस्था कुछ है। तो दादी अभी बाबा के पास वतन में बैठी हैं, तो बाबा बच्ची के बहुत बड़े रुप से ऐसा ऊँचा कार्य करायेगा जो अभी तक नहीं हुआ है।

- दादी ने कहा हम सब दादियाँ सदैव साथ हैं, चले नहीं गये। सभी वतन (परमधाम) साथ जायेंगे। 05-09-07

- बाबा ने कहा सचमुच हर ब्राह्मण आत्मा के दिल में जो बाबा के प्रति, दादियों के प्रति स्नेह है, इस स्नेह में सदा रहे तो बाबा और दादी समय प्रति समय बहुत अच्छा अनुभव कराते रहेंगे। इससे सदा निर्विघ्न बनते जायेंगे, उड़ते और उड़ाते रहेंगे। दादी ने विशेष तीन बातें कहीं (1) एक तो कहा बाबा से सच्चा स्नेह रखना (2) बड़ों को रिस्पेक्ट देना (3) ब्राह्मणों के संगठन को मजबूत रखते हुए बाबा के कार्य में तत्पर रहना तो बहुत जल्दी विश्व में बाबा को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। 06-09-07

- मेरा नंबरवन मुरब्बी बच्चा है। ब्रह्मा बाप तो फिर भी बाप हैं ना लेकिन बच्चे के रुप में मुरब्बी बच्चा मेरा दिलतख्तनशीन बच्चा है, खूब स्वागत करो।

- बाबा ने दादी को कहा ओ मेरे वफादार, फरमानबरदार, ईमानदार, सुपात्र और सबूत देने वाले बच्चे, बाबा ने आपको इनाम दिया है - आप कहाँ भी रहेंगी तो वतन में आती जाती रहेंगी। तो दादी ने कहा बाबा यही इनाम मुझे चाहिए। आप कहाँ भी मुझे भेजें मैं वतन में आती रहूँगी। तो बाबा ने कहा बच्ची न वतन को छोड़ना, न मधुबन को छोड़ना, दोनों ही स्थान पर आते चक्कर लगाते रहना। तो दादी ने कहा मैं तो निमित्त मात्र जा रही हूँ ! तो बाबा ने सुनाया, दादी बच्चे के रुप में जायेंगी, लेकिन जहाँ भी जा रही है ना उनको स्वप्न में भी नहीं है कि बच्चा हो सकता है। भक्त हैं और थोडे आधी लाइफ़ वाले हैं, बच्चे पैदा करनेवाली लाइफ़ से थोडा बड़ी आयु के हैं। इसलिए उन्हों को स्वप्न में भी नहीं है कि हमारे को कुछ हो सकता है लेकिन प्रवेशता की हलचल होती है ना, जब हलचल होगी तब उन्हों को आयेगा कि यह क्या हो रहा

है। अभी तो दादी वतन में थी, जब हलचल होगी तब सोचेंगे कि यह क्या है ! बाबा ने दिखाया कि वह माता और भाई बहुत भक्त हैं। पानी भी पीते हैं तो भगवान को पहले अर्पण करके पीते हैं, ऐसी उनकी नौधा भक्ति है। दादी जब पैदा होंगी तो ऐसे समझेंगे कि भगवान ने कोई अवतार भेजा है, बच्चा नहीं अवतार भेजा है, कुछ होने वाला है तो इस रुप में दादी जायेंगी।

- एडवान्स पार्टी को, साइन्स वालों को और आप ब्राह्मण आत्माओं को तीव्र पुरुषार्थ करने की सदा प्रेरणा देती रहेंगी। जहाँ भी साइन्स वाले मूँझते हैं- क्या होगा, कैसे होगा, होगा या नहीं होगा उन्हीं को ऐसा स्पष्ट कर देंगी जो वो तीव्र तैयारी करे, ब्राह्मण भी क्यों क्या नहीं करेंगे, बस करना ही है और एडवान्स पार्टी तो नाच रही थी, मम्मा और दीदी दोनों तरफ से दादी की बाँह पकड़े कह रही थी - दादी अभी तो हम कमाल करके दिखायेंगी।

- बस दादी को सम्मान और स्वमान यह दो शब्द बहुत याद हैं। बार बार यही शब्द रिपीट कर रही थी।

- तो बाबा गले लगे, दृष्टि दी और दादी हम सबके बीच से वतन से चली गई।

27-09-07 (दादीजी के प्रथम मास निमित्त)

- लेकिन मैं तो आपे ही आ जाती हूँ, मेरा तो घर है। फिर बाबा ने कहा बच्ची अभी पार्ट बजाने के लिए गई है। कर्मों के हिसाब से, कर्म संबंध के हिसाब से नहीं गई है लेकिन सेवा के संबंध से गई है। तो यह सेवा के संबंध का जन्म बहुत न्यारा होता है। मैंने कहा बाबा वो न्यारापन क्या क्या होता है, कुछ सुनाओ ना! तो बाबा ने कहा अभी नहीं सुनाऊँगा जब जन्म ले लेगी फिर सुनाऊँगा। इस जन्म में और जो साधारण जन्म होते हैं, उसमें अंतर क्या है, वह राज़ फिर सुनाऊँगा। मैंने कहा बाबा थोड़ा इशारा तो दे दो। तो दादी ने कहा बाबा सुना दो ना। तो बाबा ने कहा यह बहुत राज़ हैं, मैं समय प्रति समय सुनाता रहूँगा।

- लेकिन मेरा जो संकल्प है ना वह अभी इन्हों को पूरा करना है। तो बाबा ने कहा तुम क्या चाहती हो ? तो दादी ने कहा जैसे बाबा आप मुझे सर्टीफिकेट देते हो, कि मैंने शुरु से लेकर सबको सम्मान दिया और उसके रिटर्न में सबकी दुआयें ली, शुरु से मैंने प्रेक्टिकल में यह पाठ पक्का किया, तो मैं यही चाहती हूँ कि हर एक छोटे बड़े को सम्मान देते उन्हों से दुआयें लेवें। बस सबको सम्मान देना है, दुआयें लेनी हैं, यही मेरा लक्ष्य रहा है।

- मुझे बहुत अच्छा अनुभव हो रहा था- एक तो नष्टोमोहा स्थिति क्या होती है, कोई भी चीज़, कोई भी बात मुझे याद नहीं थी। तो दादी ने कहा मैं यह अनुभव इसलिये सुना रही हूँ कि आप सभी भी ऐसा ही पुरुषार्थ करो जो ऐसे कर्मातीत स्थिति के अनुभव में ही शरीर छूटे।

- अभी बाबा ने मुझे शरीर में भेजा है, लेकिन मैं उस भान से न्यारी हूँ। बाबा इसका राज़ आपको बाद में सुनायेंगे। लेकिन मेरा जन्म न्यारा है।

- डिपार्टमेन्ट के हेड्स सभी को दादी ने याद किया। दादी ने कहा मैं सिर्फ दो शब्द आपको कहती हूँ, ये हमारे दो शब्द कोई भी सेवा शुरु करते याद करना, फिर काम शुरु करना। तो सभी कहने लगे दादी जो आप कहेंगी, हम जरूर करेंगे, सभी बहुत उल्हास में थे। तो दादीने दो शब्द सुनाये - **एकनामी और इकोनोमी।**

20-10-07 (देश विदेश के मुख्य भाई-बहनों की मीटिंग में)

- बापदादा इस संगठन को देख बहुत खुश हैं कि देश-विदेश के बच्चे मिलकर बहुत प्यार से सेवा को निर्विघ्न बनाए आगे बढ़ाने के प्लैन बना रहे हैं। बच्चों का यह स्नेह भरा मिलन का लेन देन करने का दृश्य बापदादा देख देख खुश हो बच्चों के गीत गाते वाह ! मेरे निमित्त सर्विसेबल बच्चे वाह ! बापदादा तो निमित्त बने हुऐ बच्चों को विशेष शक्तियों का वायब्रेशन देते हैं क्योंकि बच्चों की शक्तिशाली मर्सीफुल वृत्ति से ही तो विश्व में श्रेष्ठ वायब्रेशन पहुँचता है।

- एक बाप की आशा पूर्ण करो-जो आपस में मिलकर संस्कार मिलन की रास बाप को दिखाओ क्योंकि यह **संस्कार परिवर्तन ही सर्व विघ्नों को समाप्त करने का सहज साधन है।**

25-10-07 (दादीजी की दूसरे मास की तिथि)

- बाबा ने कहा बैलेन्स की अभी भी आवश्यकता है। सेवा के समय सेवा करते हैं, योग के समय यथाशक्ति सभी योग भी करते हैं लेकिन बाबा चाहते हैं कि योगी जीवन हो। जीवन हर श्वांस में होती है। जीवन ६ -७ घंटे, २ घंटे की नहीं होती। तो बाबा इसलिये मुस्करा रहा है कि वह दिन कौन सा आयेगा जिसमें बाबा के पास टी.वी.में यह आयेगा कि मैजोरिटी बच्चे इस बैलेन्स में नंबर वन हो गये। बाबा यही सेरीमनी देखना चाहते हैं।

- दादी ने कहा मैंने क्या किया ? मैंने अपनी योगी जीवन बनाई, सिर्फ योग लगाने वाली नहीं रही, योगी जीवन में रही। तो जो भी मुझे याद करते हैं, वह मेरे समान योगी जीवन तो बनायें ना। फिर मैंने कहा दादी यज्ञ के प्रति आपको क्या संकल्प आता है ? तो कहा मैं समझती हूँ जैसे मैं निर्मोही, निर्विकल्प रही ऐसे एक एक सब अभी जल्दी जल्दी अपनी कमज़ोरी बाबा को दे देवें ना। यह बोझ बाबा को दे दो ना अपने पास क्यों रखा है? मैंने तो जन्म से ही बाबा को बोझ दे दिया था। यह फिर अपने पास क्यों रखकर बैठे हैं ?

9-11-07 (दिवाली निमित्त - मोहिनी बहन द्वारा)

- बच्चों को कहना कि अच्छी तरह से चेक करें कि आज के दिन मेरा पुराना खाता खत्म हुआ या थोड़ा बहुत है? जो हो उसको भी अति शीघ्र खत्म करके और नया सब कुछ शुरु करो। फिर बाबा ने दादी की तरफ देखा तो दादी ने सबके प्रति कहा कि अभी ये थोड़ा समय मेहनत का है, अभी थोड़ा अटेन्शन देकर अपने स्वयं के संस्कारों के ऊपर ध्यान रखें कि मुझे पुराना खत्म करना है, नया धारण करना है। मैंने कहा बाबा जब दादी कर्मेन्द्रियजीत प्रकृतिजीत, मायाजीत बन गई फिर

दादी जन्म क्यों ले रही है? तो बाबा मुस्कराये और कहा बच्चे आपकी बुद्धि में बार बार यह बात आती है। यह कोई साधारण बच्चा नहीं है, यह चमत्कारिक बच्चा है और इसका जो शरीर बन रहा है, पाँच तत्व ही इसके शरीर को सुंदर बना रहे हैं। अब जैसे जैसे ड्रामा का पर्दा खुलता जायेगा, आपको पता चलता जायेगा कि इसमें क्या राज़ हैं।

9-11-07 (दिवाली निमित्त- गुल्ज़ार दादी द्वारा)

-दादी ने कहा कि बाबा की जो हर बच्चे में शुभ भावना है और बाबा समझते हैं कि ये जो मेरे सरेन्डर बच्चे हैं। सरेन्डर का अर्थ ही है सब स्वाहा कर देना। आप सबके पास और है ही क्या जो बाबा को देंगे। इसलिए जो पुरानी चीज़ें हैं, संस्कार-स्वभाव आदि जो भी हैं वह सब कुछ समर्पण कर दो।

- आज के दिन दादी और बाबा, एडवान्स पार्टी के महारथी बच्चे जो गये हैं वो मिलकर के यही संदेश दे रहे हैं कि वह डेट मेरी कौन सी होगी जिसमें हम अपने पुरुषार्थ के अनुसार, पुरुषार्थ में सम्पन्न होंगे। तो हरेक अपने अन्दर में सोचे कि इतने समय में तो हम ज़रुर सम्पन्न बनके बाबा के आगे आयेंगे। सम्पन्न बनने की डेट फिक्स करो और उसी अनुसार अपने पुरुषार्थ को बढ़ाते रहो।

29-11-07 (दादीजी के तीसरा मास निमित्त)

- बाबा के नयनो में आज विशेष जैसे सारे वर्ल्ड की आत्माओं का गोला नज़र आ रहा था और बाबा सर्व आत्माओं को एकदम रहमदिल के रुप में, वरदाता के रुप में सकाश दे रहे थे। ऐसे ही बाबा को देखते हुए हमें भी अपना वैसा ही रूप अनुभव होने लगा।

- फिर बाबा ने कहा बच्ची देखा बाबा और आप सब मेरे जो मुरब्बी बच्चे, बाप समान बनने के उमंग-उत्साह में रहने वाले बच्चे हैं, उन्हों का वर्तमान समय काम क्या है? वह बाबा आपको दिखा रहे हैं कि आज मनुष्य आत्माओं को चाहिए क्या?

वर्तमान समय साधन तो बहुत हैं लेकिन उन साधनों से जो सुख, शान्ति की प्राप्ति होनी चाहिए, उसके बजाए अभी सब फील कर रहे हैं कि इन साधनों से सुख और दु:ख दोनों की प्राप्ति होती है। तो अभी सब महसूस कर रहे हैं कि हमारे दिल की जो चाहना है वह इन साधनों से पूरी नहीं हो रही है। तो जैसे कोई की भूख बढ़ती जाती है, वैसे आत्माओं की मैजोरिटी आशायें बढ़ती जा रही हैं कि कोई सुख चैन की अनुभूति कराने वाला मिले । चाहिए,चाहिए का आवाज़ जैसे हर एक के दिल से निकल रहा है।

- दादी का अमृतवेले का ही टाइम फिक्स है। अमृतवेले बाबा अपने साथ मुझे इमर्ज करता है। और मैं आत्माओं को सकाश देती हूँ।

- बाबा ने कहा अभी से दादी की सेवा शुरु है। मैंने कहा कैसे शुरु है ? बाबा ने कहा अभी आप सारे विश्व के अन्दर रिज़ल्ट में यह तो देख रही हो, सभी समझते हैं, साइन्स दान भी दिलशिकस्त हो गये हैं कि हम कुछ नहीं कर सकते हैं। महात्मायें अन्दर से समझते हैं हमने इतना सब किया है, लेकिन जो चाहते हैं वह नहीं हो रहा है। सर्व मनुष्य आत्मायें समझती हैं -शान्ति हो शान्ति हो लेकिन प्रेक्टिकल में तो अशान्ति ही बढ़ रही है। तो अभी से दादी की सेवा से यह परिवर्तन का प्रभाव पड़ रहा है, सभी महसूस करते हैं कि कोई और शक्ति चाहिए और दिन प्रतिदिन तीन सत्ताओं के अलावा कोई और सत्ता चाहिए, उस पर सबका ध्यान जा रहा है। वह भी समझते है कोई पावर हमारे पास आवे तो हम प्रकृति को परिवर्तन करें। अभी प्रकृति अति में जा रही है लेकिन परिवर्तन नहीं कर सकते है। तो यह जो वायुमण्डल है कि और कुछ चाहिए, और कुछ चाहिए, यह जो भावनायें हैं वह टोटल सारे विश्व में बढ़ती जा रही हैं तो दादी इस सूक्ष्म सेवा से समय को जैसे समीप ला रही है।

□□□□□□□□□□□□